परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-दाता

(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 52, अंक 1, जुलाई, 2016
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- मिडिया प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रायपुर के उपकुलपति डॉ.मानसिंह परमार, आई.बी.एन.7 चेनल के उप प्रबन्ध सम्पादक भ्राता सुमित अवस्थी, ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.करुणा भाई, ब्र.कु.शीलू बहन, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.सुशांत भाई तथा अन्य।

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- 'मूल्य और आध्यात्मिकता द्वारा जीवन में उत्कृष्टता' विषयक सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री बहन दिव्या खोसला कुमार, सोमानी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी एण्ड मैनेजमेंट, रेवारी के निदेशक डॉ.यशपाल सिंह, उत्तर उड़ीसा विश्वविद्यालय में पी.जी.कौंसिल की अध्यक्षा प्रो.एम.हेमबिन्दु, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.डॉ.हरीश शुक्ला, ब्र.कु.पुष्पा बहन तथा अन्य।

1.दिल्ली (ओ.आर.सी.)- '15वेंअखिल भारतीय भगवत गीता सम्मेलन' का उद्‌घाटन करते हुए पंजाब तथा हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता कप्तान सिंह सोलंकी, जस्टिस वी.ईश्वरैय्या, स्वामी अध्यात्मानंद महाराज, स्वामी डॉ.मुक्तानंद पुरी, स्वामी डॉ.जीवन देव महाराज, ब्र.कु.बृजमोहन भाईतथा ब्र.कु.आशा बहन। **2.कूचबेहर-** केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री भ्राता किरण रिजीजु को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सम्पा बहन। साथ में भाजपा अध्यक्ष भ्राता दिलीप घोष। **3.दार्जीलिंग-** पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल भ्राता केसरीनाथ त्रिपाठी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.भगवान भाई। साथ में ब्र.कु.मुना बहन तथा अन्य। **4.पांडिचेरी-** नवनियुक्त राज्यपाल महामहिम बहन किरण बेदी का गुलदस्ता देकर अभिनंदन करते हुए ब्र.कु.कविता बहन। साथ में ब्र.कु.शंकरन भाई। **5.नई दिल्ली-** भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के उपाध्यक्ष भ्राता राहुल गांधी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.आनंद भाई। साथ में ब्र.कु.सविता बहन तथा ब्र.कु.रपु भाई। **6.गुवाहाटी (रूपनगर)-** ब्र.कु.ज्योत्स्ना बहन, ब्र.कु.मौसमी बहन, ब्र.कु.राकेश भाईतथा अन्य, आसाम के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री भ्राता सर्बानंद सोनोवालका अभिनन्दन करने के बाद उनके साथ। **7.रायपुर-** 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए लोक निर्माण एवं पर्यावरण मंत्री भ्राता राजेश मूणत, वन मंत्री भ्राता महेश गागड़ा, ब्र.कु.कमला बहन तथा ब्र.कु.सविता बहन। **8.बरेली-** 'अलविदा तनाव' शिविर का उद्‌घाटन करते हुए केन्द्रीय कपड़ा मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भ्राता संतोष गंगवार, विधायक भ्राता अरुण कुमार, पूर्व कमिश्नर भ्राता सीताराम मीना, भाजपा प्रवक्ता भ्राता गुलशन आनंद, पूर्व महापौर बहन सुप्रिया ऐरन, ब्र.कु.पूनम बहन, ब्र.कु.मनोरमा बहन तथा अन्य।

शुभाशीष

प्रजापिता ब्रह्मा के मुख के आधार द्वारा, ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा शिव की बहती ज्ञान-धारा को जन-जन तक पहुँचाने वाली ज्ञानामृत पत्रिका जन-सेवा के सफल 51 वर्ष पूरे कर, 52वें वर्ष में प्रवेश कर रही है, यह अति हर्ष का विषय है।

दिन-प्रतिदिन आने वाली बाहरी चुनौतियों का सामना करने के लिए आन्तरिक बल को जागृत करने वाली, पारिवारिक, सामाजिक, व्यवसायिक मुश्किलों के बीच मुसकराना सिखाने वाली ज्ञानामृत पत्रिका नवीन विचारों, नवीन अनुभूतियों के साथ हर मास हमारे हृदय-द्वार पर दस्तक देती है।

युवाओं की पथप्रदर्शक, वृद्धों की सहचरी, बच्चों की प्रेरक, नारियों को नारायणी बनाने वाली इस पत्रिका को सभी राजयोगी भाई-बहनें गाँव, शहर, गली, मोहल्ले तक पहुँचाने की सेवा अथक होकर करते रहते हैं और आगे भी करते रहेंगे, ऐसी मेरी शुभकामना है। जो भाई-बहनें लेखों के रूप में नवीन विचारों की गुलाबाशी करते हैं, जो इसके रूप को सजाते-निखारते हैं, जो इसे लोगों तक पहुँचाकर लोकप्रिय बनाते हैं, जो इसे पढ़कर अपना और दूसरों का सशक्तिकरण करते हैं, उन सबको मैं कोटि-कोटि बधाई देती हूँ।

वर्ष 2016-2017 के लिए ज्ञान-मोती चुगने वाले ज्ञान-हंसों के प्रति मेरा यही शुभ सन्देश है कि ज्ञान के मास्टर सूर्य बनकर विश्व से विकारों का अन्धकार मिटा दें। सर्व की शुभ कामनाओं को पूर्ण करने वाले कामधेनु बनें। सहनशीलता, नम्रता और धैर्य की शक्ति से हरेक रूह को राहत प्रदान करते हुए निरन्तर उड़ती कला का अनुभव करें। बापदादा और हम सब की यह प्यारी पत्रिका दिनोंदिन उन्नति को पाती हुई ज्ञान प्रकाश से विश्व को आलोकित करती रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

बी. के. जानकी

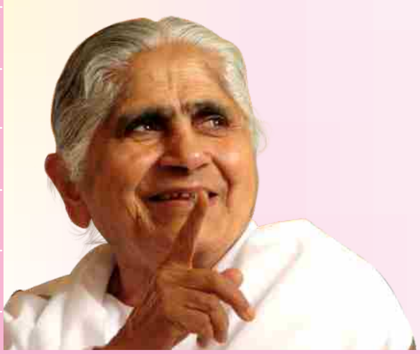

अमृत-सूची

- गरीबी रेखा *(सम्पादकीय)*...... 4
- श्रद्धांजलि 6
- लेखकों से निवेदन.............6
- दीदी जी गुणग्राही थी 7
- धर्म की परिभाषा 9
- वानप्रस्थ अवस्था में 11
- भगवान ने भेजा दूत 12
- पढ़ाई में बाबा की मदद 13
- आध्यात्मिकता और 14
- बीमारी को सहने में...........15
- कदम-कदम पर बाबा मेरा....16
- मेला और झमेला 18
- जेल में नया जन्म 19
- जीवनदायी जल को दें 20
- प्रभुपथ दिखाने वाली 22
- संविधान के बारे में...........25
- दुख को बदला सुख में.......27
- पवित्र दृष्टि 28
- आम फलों का राजा क्यों? ..29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- दु:ख अशान्ति का इलाज 32
- भारी मन को किया 33
- पत्र सम्पादक के नाम 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

गरीबी रेखा

एक सर्वे के अनुसार, भारत में गरीबी रेखा से नीचे के लोग लगभग 40% हैं परन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि सच्ची शान्ति की रेखा से नीचे लोग कितने हैं? सच्चे प्रेम, सच्चे आनन्द और सच्ची खुशी की रेखा से नीचे लोग कितने हैं? हालात तो यही कह रहे हैं कि सच्ची शान्ति, सच्ची खुशी आदि के संबंध में सर्वे करने वाला व्यक्ति भी शायद इस रेखा से नीचे ही होगा। कई बार इस प्रकार के आंकड़े भी आते हैं कि पिछले दशक की भेंट में इस दशक में लोगों की प्रति व्यक्ति आय बढ़ गई है परन्तु पुनः प्रश्न उठता है कि पिछले दशक की भेंट में इस दशक में प्रति व्यक्ति खुशी कितनी बढ़ी, प्रति व्यक्ति शान्ति कितनी बढ़ी, प्रति व्यक्ति आनन्द कितना बढ़ा? क्या इसका भी कोई आंकड़ा है?

बुराइयों की बलि नहीं दी

सरकारें प्रयास करती हैं गरीबी दूर करने का, इसके लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। जानवरों को कुर्बान करके भी मनुष्य को अमीर बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं परन्तु असमान वितरण, बेईमानी, कर्त्तव्यहीनता को तो कुर्बान किया नहीं गया। बढ़ती हुई इच्छाओं, तृष्णाओं तथा सामाजिक असरोकारों की तो बलि दी नहीं गई। प्रकृति से लूट-खसूट और प्राणियों के उदर-छेदन से मिलने वाला धन तो दिखावा मात्र है जो अपने साथ इतनी समस्यायें लेकर आता है कि लेने के देने पड़ रहे हैं।

परदारेषु मातृवत् का उल्लंघन

वास्तव में गरीबी का असली कारण है चरित्र की गरीबी और आध्यात्मिक शक्तियों की गरीबी। इस गरीबी के कारण ही मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों के वश होता है और ये विकार ही उसका सर्वस्व लूट लेते हैं। इतिहास गवाह है कि भारत के भरे सोने के मटके – काम, क्रोध, ईर्ष्या आदि विकारों के कारण सूख गये। सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत के सोने पर आकर्षित होकर संवत 1,082 में सोमनाथ मंदिर पर महमूद गजनवी का आक्रमण हुआ। महमूद ने भारत पर बड़ा अत्याचार किया। है भी सत्य, दूसरे के धन को लालच की निगाह से देखना क्रूरता ही है। इसलिए भारतीय संस्कृति कहती है, 'परधनं लोष्टवत् परदारेषु मातृवत्' अर्थात् दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान समझो और दूसरे की स्त्री को माता के समान समझो। पर आक्रमणकारियों की संस्कृति, परधन को मिट्टी समझने के बजाय उस पर ललचाती रही और अत्याचारों के लिए उन्हें उकसाती रही। लेकिन हमें भी तो अपने अंदर झांक कर यह देखना है कि हम आक्रमणकारियों से पराजित क्यों हुए, हमारी कौन-सी कमजोरी रही? आक्रमणकारी तो चोट मारेगा पर हमें उसे कोसने के बजाय अपनी दीवार को मजबूत करना पड़ेगा। अगर हमारी दीवार ही कमजोर होगी तो रक्षा हो ही नहीं पायेगी। तो हमें अपनी कमजोरी खोजनी है ताकि उसे भर सकें और भविष्य के लिए शिक्षा ले सकें। इतिहास कहता है कि जब महमूद ने आक्रमण किया, उस समय सोमनाथ क्षेत्र का महाराजा भीमदेव बहुत बहादुरी से लड़ा। परन्तु मंदिर की एक देवदासी के नाम-रूप में वह बुरी तरह फंस गया। हालांकि उसकी अपनी रानियाँ थीं परंतु शिव-अर्पण देवदासी, जो राजा के लिए भी देवी-समान, माता-समान पूज्या होनी चाहिए थी, उसके प्रति काम-वासना जाग गई। राजा के इस कुकृत्य से मंदिर के एक पुजारी को राजा से ईर्ष्या हो गई। उसने महमूद के सिपाहियों को मन्दिर का गुप्त रास्ता बता दिया और भारत एक हज़ार साल के लिए पराधीन हो गया। नीर-क्षीर

विवेकी होकर फैसला करें तो परिणाम यही निकलता है कि हमने संस्कृति के उस सूत्र वाक्य 'परदारेषु मातृवत्' का उल्लंघन करने की भारी भूल की। हमने ईर्ष्या की आग में जलने की भूल की। हमने बदले की आग में जलकर अपनों को दुश्मन और दुश्मनों को अपना मानने की भूल की। परिणाम यह निकला कि हम अपने-पराये दोनों से ही बिगाड़ बैठे। पराए हमारे हो नहीं पाए और अपनों को हमने अपना बनाके रखा नहीं।

छद्म आक्रमणकारी

एक हज़ार वर्षों तक पराधीनता की सज़ा भोगने के बाद धन, साधन और खज़ानों के नाम पर दिवालिया देश हमारे हाथों में आया। जिन मंदिरों में सोना लगा था, आज वहाँ से ईंटें भी निकाल ली गई हैं। लेकिन क्या हमने इतिहास से शिक्षा ली? आज इस देश के पास विदेशियों को आकर्षित करने के लिए हीरे-जवाहरात और सोना नहीं रहा। उनके प्रत्यक्ष आक्रमण बंद हो गये लेकिन आज दूसरी प्रकार के छद्म आक्रमणकारी हमें मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक रीति से कमजोर करने में लगे हुए हैं। जब चरित्र-बल गिर जाता है तो अर्थ-बल को गिरने से रोका नहीं जा सकता।

'वाह री विधवा' शीर्षक वाली एक कहानी याद आती है। कहानी में एक महिला का पति तीस हज़ार मासिक कमाता है पर शराब, कबाब, होटल, सिनेमा में महीने के पंद्रह हजार रुपये उड़ा देता है। बाकी पैसे में से भी घर की महिला को कुछ नहीं मिल पाता है। बेचारी पत्नी रोटी और कपड़े की मोहताज, पीहर से थोड़ा-बहुत लाकर छिपा-छिपाकर अपने अभावों को भरती है। लोग उसे देखते हैं और कहते हैं, 'हाय री सधवा!' दस वर्षों तक ऐसे गरीबी की रेखा से नीचे का जीवन व्यतीत करने के बाद उस व्यसनी व्यक्ति की अकाल-मृत्यु हो जाती है और महिला को बारह हज़ार रुपये पेन्शन मिलने लगती है। अब वह गरीबी रेखा से ऊपर आ जाती है। उसे रोटी, कपड़ा और मकान का सुख मिलते देख लोग कहने लगे, 'वाह री विधवा!' इस महिला की गरीबी और पुरुष की अकाल-मृत्यु का कारण क्या है? दुश्चरित्रता और सद्गुणों की कमी ही है ना! क्या सच्चरित्रता और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार किये बिना हम इस प्रकार की गरीबी को मिटा सकेंगे?

रोटी के साथ प्रेम-शान्ति-सम्मान भी चाहिए

हमारे चारों ओर ऐसी कितनी ही सत्य घटनायें प्रतिदिन घटती हैं जब एक क्रोधी और शराबी झूमता हुआ घर आता है। भोजन में तीन-चार प्रकार की चीज़ें बनाकर महिला उसके इंतजार में होती है लेकिन वह क्रोधी, शराबी, अय्याशी व्यक्ति ऐसा कोहराम मचाता है कि पत्नी और बच्चे भूखे के भूखे सो जाते हैं और रसोई में बना हुआ भोजन सुबह कूड़े में फेंक दिया जाता है। रोटी होते हुए भी, रोटी मुख में न डाल सकने की यह मजबूरी अमीर को भी गरीबी की रेखा से नीचे ले आती है। एक सौ पच्चीस करोड़ की आबादी वाले भारत देश में और 750 करोड़ की आबादी वाले इस विश्व में न जाने ऐसे गरीब कितने होंगे? रोटी होते हुए भी रोटी न खा सकने की यह गरीबी ईश्वरीय ज्ञान से ही मिट सकती है क्योंकि पेट भरने के लिए केवल रोटी ही नहीं बल्कि प्रेम, शान्ति और सम्मानयुक्त वातावरण भी चाहिए।

फिसलनी राहें

नर हों या नारियाँ – सच्चाई, ईमानदारी, पवित्रता, संतुष्टता, सद्भावना, सहानुभूति आदि गुणों के अभाव में धन के अभाव को भी झेल रहे हैं। जब हम तृष्णाओं की तरफ दौड़ते हैं तो आवश्यकताओं की पूर्ति से भी हाथ धो बैठते हैं। यदि मनुष्य संतोषपूर्वक केवल ज़रूरतों को पूरा करे तो आज भी प्रकृति सम्मानपूर्वक उसकी पालना करने के लिए तैयार है लेकिन साधनों और पदार्थों के अनावश्यक संग्रह का परिणाम यह निकलता है कि ना साधन मिलते हैं और ना मन की शान्ति। एक महिला एक

प्राइवेट स्कूल में नौकरी के लिए आई। स्कूल वालों ने वेतनमान बताया 5 हज़ार रुपये मासिक। किसी हमदर्द व्यक्ति ने उस महिला से पूछा कि इतनी कम आय में तुम आठ घंटे की ड्यूटी कैसे बजाओगी। महिला ने बड़ी सच्चाई से अपनी मजबूरी सुनाई कि मैंने अपने बैंकर पति को प्रतिदिन फैशन और श्रृंगार की मांग करके गबन करने के लिए उकसाया। उसने बीस हज़ार रुपये की हेर-फेर की। वह निलंबित हो गया, जुर्माना भी हुआ। बच्चे भूखे मरने लगे तो मजबूर होकर मैं नौकरी के लिए आ गई। गरीबी रेखा से ऊपर जीने वाला यह परिवार एकाएक गरीबी रेखा से नीचे कैसे आ गया? जब हम फैशन और गबन की फिसलनी राहों पर चलेंगे तो ऊपर की ओर कैसे चढ़ेंगे? इस प्रकार की फिसलन ही गरीबी रेखा से नीचे ले आती है।

उपरोक्त चर्चा का सार यही है कि दुश्चरित्रता, अज्ञान, व्यसन, भ्रष्टाचार, फैशन, लोभ और इनके साथी विकारों की रेखा को मिटाये बिना गरीबी की रेखा को नहीं मिटाया जा सकता। दुश्चरित्रता की रेखा मिटाने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक संपत्ति जैसे – खुशी, शान्ति, प्रेम, सम्मान, शक्ति आदि चाहिएँ। ये सभी गुण और शक्तियाँ राजयोग के अभ्यास से ही प्राप्त हो सकते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आने वाले लाखों भाई-बहनें आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के अभ्यास द्वारा मानसिक, शारीरिक और आर्थिक कमज़ोरियों से ऊपर उठकर समृद्ध बने हैं जिन्हें देखकर कई बार लोगों को भ्रम भी होता है कि शायद यह विश्व विद्यालय अमीरों की ही संस्था है लेकिन वास्तविकता यह है कि ईश्वरीय ज्ञान द्वारा यह गरीबों को अमीर बनाने वाली संस्था है, स्वास्थ्य की पूंजी से रहित व्यक्ति को स्वास्थ्य रूपी धन देने वाली संस्था है और मनोबल-हीन व्यक्ति को आध्यात्मिक-मानसिक बल देने वाली है। अत: देश के कर्णधार और योजनाकार योजनायें बनाते समय भौतिक गरीबी के साथ-साथ आध्यात्मिक गरीबी की ओर भी ध्यान दें। गरीबी रेखा मिटाने के साथ-साथ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, नफरत, अशान्ति, व्यसन आदि की ऊपर चढ़ती रेखाएँ भी मिटाने के लिए योजनायें बनायें। प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के प्रयासों के साथ-साथ, प्रति व्यक्ति खुशी, शान्ति और शक्ति बढ़ाने की योजनायें भी अवश्य बनाएँ।

- ब्र.कु.आत्मप्रकाश

श्रद्धांजलि

साकार मम्मा-बाबा की पालना में पले, फिरोजाबाद के आधारमूर्त, विश्वकल्याणकारी, यज्ञ स्नेही, अथक सेवाधारी ब्र.कु.अश्वनी भाई जी को सन् 1962 में ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ। आपकी युगल भी तन-मन-धन से यज्ञ में सहयोगी हैं। लौकिक परिवार में रहते हुए भी आपने ज्ञानामृत, ओमशान्ति मिडिया और राजी खुशी पत्रिका को घर-घर पहुँचाकर अनेक आत्माओं को परमात्मा का संदेश दिया। 30 मई सायं 6.30 बजे, अन्तिम समय भी सेवा करते हुए रास्ते में ही अचानक आपको हार्ट अटैक पड़ा और वहीं अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में समा गये। ऐसी स्नेही, अथक सेवाधारी, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

लेखकों से निवेदन

- जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें।
- लेख और कवितायें साफ-साफ लिखें। यदि टाइप कराके भेजना चाहें तो आप पोस्ट द्वारा या ई-मेल gyanamritpatrika@bkivv.org पर भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।

पुण्यतिथि पर विशेष.....

दीदी जी गुणग्राही थी

❍ ब्रह्माकुमार रामलोचन, शान्तिवन

ईश्वरीय ज्ञान में मैं सन् 1972 में आया और पहली बार मधुबन आने का निमंत्रण देने के निमित्त बनी दीदी मनमोहिनी। उन गुणनिधि के अनेकानेक गुणों में से कुछ का वर्णन कर रहा हूँ –

भगवान के साथ बुद्धि की लाइन क्लियर और कैचिंग पावरफुल थी

मैं दिल्ली में रहता था, रेलवे में सेवा करते पाँच महीने ही बीते थे, तब तक मधुबन नहीं आया था। एक दिन दीदी मनमोहिनी ने सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन को पत्र लिखा और कुछ विशेषताओं का वर्णन करके कहा, ऐसा कोई भाई आपके आस-पास हो तो उसे 15 दिनों के लिए मधुबन भेज दो। निमित्त बहन ने मुझे मधुबन भेज दिया। मधुबन में सेवा करते-करते पन्द्रह दिन पूरे हुए तो मैंने कहा, दीदी, मैं वापस जाता हूँ। दीदी ने कहा, पन्द्रह दिन और रुक जाओ। ऐसे करते-करते 6 महीने तक रुकने को कहा। मैंने उसी समय कहा, जाना है तो इसी समय, नहीं तो फिर कभी नहीं जाना। दीदी ने कहा, ऐसे एकदम तो किसी को नहीं रखेंगे, 3 मास, 6 मास ट्रायल पर रखकर स्वभाव-संस्कार देखेंगे, फिर ठीक लगा तो रखेंगे। मैंने पुनः वही बात दोहराई। दीदी ने कहा, सुबह योग में आपका चेहरा मुझे दिखता है और बाबा कहता है, इस बच्चे को रख लो इसलिए मैं कुछ नहीं कह सकती हूँ, रह जाओ। इस प्रकार दीदी ने ईश्वरीय टचिंग के आधार पर इस आत्मा को रहने की स्वीकृति दे दी।

श्रीमत पर पूरा चलती थी तथा दूसरों को चलाती थी

दीदी ने 6 मास बाद हमको दिल्ली, पांडव भवन सेवा के लिए भेज दिया। वहाँ मन नहीं लगता था, मधुबन बहुत याद आता था। एक बार बाबा से मिलने मधुबन आए तो दीदी को सब बताया और कहा, वापस नहीं जाना चाहता हूँ। दीदी ने कहा, आपने बाबा से क्या वायदा किया, 'जहाँ बिठाओ, जो खिलाओ, जहाँ सेवा कराओ – सब मंजूर है।' जब बाबा ने बिठा दिया फिर दीदी-दीदी क्यों करता है, जब जरूरत होगी, बाबा यहाँ बुला लेगा, ऐसे कहकर वापस दिल्ली (पाण्डव भवन) भेज दिया। फिर चार साल के बाद मधुबन आया, आवश्यकता थी तो रोक लिया, फिर भण्डारे की सेवा सौंप दी। इस प्रकार बाबा की श्रीमत अनुसार सेवा करने की सीख दीदी ने दी।

हर एक की विशेषता देख उसी के आधार से आगे बढ़ाती थी

दीदी हरेक का गुण ही देखती थी, कभी किसी का अवगुण नहीं देखा, अवगुण को गुण में बदलकर समझाती थी जिससे वो आत्मा उस अवगुण को छोड़ने को तैयार हो जाती थी। जब मुझे दीदी जी का खाना बनाने के लिए मधुबन भण्डारे में रखा गया तब देखता था कि दीदी हरेक की विशेषता को देखती हैं और क्लास में उसकी विशेषता की महिमा करती हैं। मेरे साथ भी ऐसा कई बार हुआ। क्लास में महिमा होने से उमंग-उत्साह आ जाता था। उमंग के कारण सेवा बहुत करता था। दिल की दुआएँ दीदी को देता था।

न्यारी तथा मिलनसार थी

जब कोई विशिष्ट व्यक्ति आता था और दीदी उससे

मिलती थी तो खुद तो बाबा की याद में रहती ही थी लेकिन उसको इतना प्यार देती थी कि उसके मुख से भी बाबा-बाबा निकलने लगता था। एक विदेशी बहन शैली थी, उसको इतना प्यार दिया कि वो बाबा-बाबा करने लगी और स्नेह से उसके आँसू बहने लगे। जब बापदादा आए तो बोले, 'ये बड़े लोग सदा ऑफिशियल रहते हैं। कहीं जाते हैं तो भी परिवार का प्यार नहीं मिलता। आपने जो परिवार का प्यार दिया है इसलिए पिघल गई है, बाबा-बाबा करने लगी है।'

ब्रह्मा भोजन बहुत प्यार से, श्रेष्ठ, महान समझकर खाती थी

दीदी जी ने सिखाया, ब्रह्मा भोजन साधारण भोजन नहीं है। भक्ति में प्रसाद का बहुत महत्त्व होता है लेकिन यहाँ तो इस भोजन को भगवान ने सीधा स्वीकार किया है, इसके लिए देवता भी तरसते हैं, इस स्मृति से भोजन स्वीकार करना है। भगवान ने स्वीकार किया वो भोजन अच्छे से अच्छा है। जो बाबा को प्रिय सो हम बच्चों को प्रिय। उन्होंने कभी भी भोजन के बारे में शिकायत नहीं की कि आज खाना ठीक नहीं बना है।

पढ़ाई में तथा योग में नियमित थी, दूसरों को भी ऐसा बनाने की कला बहुत अच्छी थी

कुछ भाई ऐसे थे, क्लास में समय पर तथा नियमित नहीं पहुँचते थे, दीदी ने एक-दो बार समझाया था, फिर भी नियमित नहीं हुए। दीदी ने युक्ति रची और योग में न आने वाले को कहा, तुम योग में आने वालों की हाजरी भरा करो, उस समय देखना, बाबा की कितनी याद रहती है, दीदी को चार्ट बताना। जो मुरली में नियमित नहीं होता था, उसको कहती थी, आज मुरली की प्वाइंट नोट करके आना, दीदी को सुनाना, दीदी सेवा के लिए भेजेगी, ऐसी सेवा मिलने पर उन्हें क्लास में जाना ही पड़ता था।

निर्णय देने की विशेषता सबसे न्यारी थी

दीदी के पास यदि किसी की शिकायत आती तो जिसके प्रति शिकायत होती, उससे पूछती, क्या बात है? एक बार मेरी शिकायत हुई थी, मैंने सारी बात बता दी। दीदी ने पूछा, तुम्हारी गलती है? मैंने कहा, मेरी समझ से मेरी गलती नहीं है। 'नहीं' शब्द निकलते ही दीदी युक्ति से कहती थी, बाबा के कमरे में जाओ और बाबा से पूछो कि बाबा, जो मैंने बताया, वो सच है? बाबा के सामने तो आत्मा दर्पण की तरह स्पष्ट हो जाती है, सब दिखता है, झूठ बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। फिर आकर दीदी को स्पष्ट बता देते थे। इस प्रकार फैसला करती थी, सन्तुष्ट करती थी।

सदा स्वमान में रहती थी तथा स्वमान की याद दिलाकर कमजोर को महान बनाती थी।

मेरे अन्दर इतनी विशेषता नहीं थी, पढ़ा-लिखा भी नहीं था लेकिन दीदी कहती थी, तुम्हारे पर भगवान की नजर पड़ी है, आत्माओं में महान आत्मा का भोजन बनाते हो, बाबा का भोग भी बनाते हो इसलिए तुम बहुत महान हो, इस स्वमान में रहकर सेवा करो। स्वमान में रहकर सेवा करोगे तो कमजोरी आ नहीं सकती।

वातावरण सदा पावरफुल रहे, इसका पूरा ख्याल रखती थी

एक बार मेरी शिकायत हुई, दीदी ने अपनी विधि के अनुसार मुझे बाबा के कमरे में भेजा, वापस आया तो पूछा, गलती की है? मैंने कहा, नहीं। फिर पूछा, बाबा ने क्या कहा? मैंने कहा, बाबा ने कहा, जैसा दीदी कहती है, मान लो। तब दीदी ने कहा, गलती है नहीं, वायुमण्डल में है कि तुमने गलती की है, स्वीकार कर लो, वायुमण्डल सुधर जाएगा। थोड़े दिन बाद सच्चाई सामने आ गई पर मेरे स्वीकार करने से उस समय वायुमण्डल की हलचल थम गई। इस प्रकार वातावरण को शक्तिशाली बनाए रखने पर बहुत ध्यान देती थी।

दीदी की व्यवहारिक शिक्षाओं से, मातृवत् पालना से हम आध्यात्मिकता में परिपक्व होते गए। आज भी दीदी की शिक्षाएँ पल-पल साथ रहती हैं और काम आती हैं। ❖

धर्म की परिभाषा

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

आज दुनिया में चारों ओर धार्मिक घृणा, वैर, विरोध दिनोंदिन उग्र होते जा रहे हैं। इससे धर्म बदनाम भी हो रहे हैं और व्यक्तिगत जीवन भी इस अग्नि में जलकर अशान्त होता जा रहा है।

क्या है ईश्वर का धर्म?

कई लोगों का मानना है कि यदि सभी धर्म मिलकर एक हो जाएँ तो यह समस्या हल हो सकती है परन्तु वास्तविकता यह है कि धारणाएँ, मान्यताएँ, मत, सम्प्रदाय अनेक हैं परन्तु धर्म तो सभी का है ही एक। जिस प्रकार हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध सबका सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी एक है वैसे ही मानव मात्र का धर्म भी एक है। हरेक मानव आत्मा का धर्म जिसे स्वधर्म भी कहा गया है, पवित्रता और शान्ति है। भगवान जिन्हें हम अल्लाह, गॉड, ईश्वर, वाहेगुरु आदि भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं, का धर्म क्या है? क्या ईश्वर हिन्दू है? मुस्लिम है? ईसाई है? बौद्ध है? नहीं ना। तो फिर हम उनकी सन्तान आत्माएँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई कैसे हो गईं? पिता का धर्म ही पुत्र को मिलता है। हम सब परमपिता परमात्मा के अविनाशी पुत्र हैं इसलिए जो पिता का धर्म है वही हमारा धर्म है। पिता परमात्मा को सारे विश्व की आत्माएँ पवित्रता का सागर (Ocean of purity), शान्ति का सागर (Ocean of peace) कहकर याद करती हैं, पुकारती हैं तो परमात्मा का धर्म है सबको पवित्रता और शान्ति से भरपूर करना और हमारा धर्म है पवित्रता और शान्ति का स्वरूप बनकर कर्म में आना ताकि कर्म श्रेष्ठ बनें।

धर्म शब्द संस्कृत की धृ धातु से लिया गया है जिसका अर्थ है धारणा। व्यवहारिक जीवन में उच्च नैतिक मूल्यों की धारणा जिससे मानव का चरित्र ऊँचा हो, अन्य मनुष्यों से वह सद्व्यवहार करे, कर्त्तव्य पालन करे, इसे ही धर्म

कहते हैं। यह धर्म मानव में शीतलता, सेवा, धीरज, त्याग, सहानुभूति, आत्मकल्याण, परोपकार, सादगी, सद्विचार और निर्विकार जीवन की भावना जागृत करता है।

वैश्विक सामन्जस्य का सूत्र है धर्म

धर्म को अंग्रेजी में रिलिजन कहते हैं परन्तु मूल रूप से संस्कृत भाषा से उद्गमित इस शब्द का यह समग्र अनुवाद नहीं है। यदि हम शाब्दिक अर्थ में जाएँ तो 'धर्मशाला' का अंग्रेजी अनुवाद होगा 'रिलिजियस स्कूल (Religious School)' तथा 'धर्मार्थ अस्पताल' का अर्थ होगा 'हॉस्पिटल फॉर रिलिजन (Hospital for religion)'। 'राजधर्म' का अर्थ होगा 'रिलिजन ऑफ किंग' और 'पुत्रधर्म' का अर्थ होगा 'रिलिजन ऑफ सन।' परन्तु इस प्रकार के कोरे अनुवाद से इन शब्दों का सही अर्थ प्रकट नहीं हो पाता। हम अपने लिए बनाए गए मकान को धर्मशाला नहीं कहते पर सेवा, परोपकार, जन-कल्याण की भावना से बनाए गए भवन को धर्मशाला कहते हैं। 'राजधर्म' का अर्थ है राजा के वे कर्त्तव्य जो उसे

प्रजापालक बनाते हैं और पुत्रधर्म का अर्थ है पुत्र के वे कर्त्तव्य जो उसे माता-पिता से जोड़ते हैं। अत: धर्म का अर्थ उन गुणों की धारणा से है जो हमें परिवार, समाज, देश और विश्व से जोड़ते हैं। व्याष्टि, समष्टी, सृष्टि और परमेष्ठी से मानव को जोड़ने वाला वैश्विक सामन्जस्य का सूत्र है धर्म।

शारीरिक धर्मों का शरीर के साथ अन्त

जब सृष्टि पर मानव का आविर्भाव हुआ तो उसके साथ धर्म का भी आविर्भाव हुआ। धर्म उतना ही पुराना है जितनी मानवीय संरचना। मानवीय संरचना में दो चीजें हैं, एक है आत्मा और दूसरा है शरीर। आत्मा अनादि है और उसके गुण (ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द, शक्ति) भी अनादि हैं। ये गुण ही इसका वास्तविक धर्म है। शरीर विनाशी है और शरीर के धर्म, शरीर के साथ जन्म लेकर, शरीर के साथ ही विनष्ट हो जाते हैं। हम किसी बच्चे को हिन्दू महज इसलिए कहते हैं क्योंकि वह हिन्दू पिता से जन्मा है, चाहे उसे इस कथित धर्म के बारे में कोई भी जानकारी न हो। इसी प्रकार, किसी बच्चे को मुस्लिम महज इसलिए मान लिया जाता है क्योंकि वह मुस्लिम पिता से जन्मा है, भले ही वह इस कथित धर्म के क्रियाकलापों का अनुसरण न करता हो। अन्य धर्मों के बारे में भी यही तथ्य है। इससे सिद्ध होता है कि मात्र शरीर लेने से प्राप्त धर्म शरीर की समाप्ति के साथ ही समाप्त हो जाता है परन्तु आत्मा का अन्त नहीं इसलिए उसके स्वधर्म का भी कभी अन्त नहीं होता।

धर्म के कमजोर होने के कारण

जैसा कि ऊपर कहा गया, आत्मा के मूल गुण ही इसका वास्तविक धर्म है। आत्माएँ जब इस मूल धर्म में स्थित होती हैं तो संसार में धर्म को बल प्राप्त होता है। इस मूल धर्म को त्याग कर हिंसा, दबाव, शोषण का मार्ग अपनाएँ तो धर्म कमजोर हो जाता है। आज धर्म कमजोर है। कमजोर धर्म को सशक्त करने की आवश्यकता है। कहा गया है, Religion is might (धर्म में शक्ति है)। जो धर्म स्वयं शक्तिशाली है उसे सशक्त करने की जरूरत क्यों? जो मानव को बल देता है वह बलहीन क्यों? इसके निम्नलिखित कारण हैं –

आज कुछ लोग धर्म से विमुख हैं। वे धर्म में कर्म-काण्ड का बाहुल्य देखकर, धर्म को एक आडम्बर अथवा पण्डों की कमाई का साधन मात्र मान लेते हैं परन्तु ये कर्मकाण्ड तो पौधों के साथ उपजी जंगली घास की तरह हैं। इन्हें छोड़ देना ठीक है पर इन्हें देख पौधे रूपी धर्म को छोड़ना ठीक नहीं।

कुछ लोग धर्मभीरु हैं जो रात-दिन कर्मकाण्डों में लगे रहते हैं परन्तु आचार के नियमों को जीवन में नहीं अपनाते। ये कर्मकाण्ड परमसत्ता की अनुभूति कराने वाले या चरित्र को उज्ज्वल करने वाले नहीं हैं इसलिए उनके जीवन में शान्ति, अहिंसा, इन्द्रिय-संयम आदि का विकास नहीं हो पाता है।

कुछ लोग मात्र कर्म को ही धर्म मान बैठे हैं परन्तु किसी भी नैतिक मूल्य, आचार-संहिता या मर्यादा से रहित कर्म, मानव को निरंकुश, स्वार्थी और उच्छृंखल बना देता है। पाश्चात्य देशों में धर्म को त्यागकर केवल कर्मवादी बनने से असन्तोष और अशान्ति चरम सीमा पर हैं।

कुछ लोग कर्मक्षेत्र और धर्मक्षेत्र को अलग-अलग मानते हैं। वे कहते हैं, प्रात: उठकर जैसी जिसकी भावना हो, वह पूजा, पाठ, निमाज, ग्रंथसाहब पढ़े परन्तु देश-समाज के मामलों में मानव को धर्मनिरपेक्ष हो जाना चाहिए परन्तु इसके फलस्वरूप, शिक्षा संस्थाओं में अनुशासनहीनता, राजनीति में सिद्धान्तहीनता, नौकरी और व्यापार में रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी तथा अन्य भ्रष्टाचार पनप रहे हैं।

पवित्रता के बल की आवश्यकता

भ्रान्तियों में उलझे लोग धर्म की कमजोरी को मिटाने के लिए तलवारों और बन्दूकों का सहारा लेना चाहते हैं परन्तु

जिस धर्म का नारा ही अहिंसा है, उसकी रक्षा भला हिंसा द्वारा कैसे होगी? अत: धर्म को आवश्यकता है पवित्रता के बल की। पवित्रता बिना धर्म निर्बल है। यदि हमें धर्म को बल देना है तो मन, वचन, कर्म की पवित्रता का बल दें। हम स्वयं के जीवन में परोपकार, दया, शान्ति, निस्वार्थ भावना, त्याग, सद्‌विचार, निष्पक्षता ले आएँ तो धर्म स्वत: सशक्त हो जाएगा।

धर्मयुग का आह्वान

मानव जीवन के लिए धर्म उतना ही अनिवार्य है जितने कि हवा, पानी और खाद्य। जैसे इनके बिना शरीर सशक्त नहीं हो सकता, धर्म (श्रेष्ठ गुणों की धारणा) के बिना आत्मा सशक्त नहीं हो सकती। जैसे बेतरतीब बहते पानी को बांध बनाकर दिशा दी जाती है ऐसे ही दिशाहीन मानव जीवन को धर्म के अंकुश की आवश्यकता है ताकि वह लक्ष्य तक पहुँचे। धर्म में स्थित होकर कर्म करने पर ही कर्मों में सम्पूर्णता आती है। धर्म और कर्म का चोली-दामन जैसा साथ है। धर्म को भूलकर जो कर्म किए जाते हैं वे मानो माया की नगरी में बेगार के समान हैं जिनका कोई मूल्य नहीं मिलता। जीवन भर केवल कर्मों में लिपायमान रहने वाला व्यक्ति कर्मबन्धनों में जकड़ता जाता है जबकि धर्मयुक्त कर्म उसे बन्धनमुक्त बनाते हैं। परमात्मा शिव का सन्देश है कि धर्म-ज्ञान प्राप्त करके हम पवित्र और योगी बनें ताकि विश्व में फिर से धर्मयुग (सतयुग) आ जाए।

शिवभगवानुवाच – "बापदादा से वा आप सर्वश्रेष्ठ आत्माओं से सर्व धर्म की आत्मायें एक मुख्य चीज जरूर चाहती हैं। ज्ञान और योग की बातें हर धर्म में अलग-अलग हैं, जिनको कहा जाता है मान्यतायें। लेकिन एक बात सब धर्मों में एक ही है। सर्व आत्मायें दया वा कृपा, जिसको वे अपनी भाषा में ब्लैसिंग कहते हैं, सब चाहते हैं। आप सभी आत्माओं से अब लास्ट जन्म में भी आपके भक्त यही चाहते हैं – जरा-सी कृपा-दृष्टि कर लो। जरा हमारे ऊपर भी दया कर लो। सर्व धर्मों की मूल निशानी दया मानते हैं। अगर कोई भी धर्मी आत्मा दयालु नहीं वा दया-दृष्टि वाला नहीं तो उसको धर्मी नहीं मानते हैं। धर्म अर्थात् दया। तो हर आत्मा पर दया की दृष्टि रखो। दयालु और कृपालु बनो।"

❖

वानप्रस्थ अवस्था में मैराथन जीत

ब्रह्माकुमार राजा भाई, शान्तिवन

मेरी आयु 62 साल है। सन् 2014 में माउण्ट आबू में मैराथन हुआ। बाबा ने उस रेस में जवानों में पाँचवाँ नम्बर और अपनी उम्र वालों में पहला नंबर दिलाया। मुझे इनाम दिया गया। फिर आबू में सी.आई.टी.कॉलेज में डी.एम.ने मुझे सम्मानित किया। वहाँ भी दौड़ में पहला नंबर आया। पिंडवाड़ा में भी दौड़ में पहला नंबर आया। दादी जी के स्मृति दिवस पर आयोजित दौड़ में भी पहला नंबर आया। ऋषिकेश में, मसूरी में, गुड़गाँव में, दिल्ली, एयरटेल आदि सभी दौड़ कार्यक्रमों में पहला नंबर आया। दिल्ली राजधानी मैराथन में 1 घंटा, 51 मिनट, 47 सेकंड में विन्नर रहा। वहाँ 30 हजार का चेक मिला। शान्तिवन के सब भाइयों ने और ब्र.कु.भूपाल भाई ने खूब दूध-घी पिलाया। सबकी दुआओं से और बाबा की कमाल से न कोई तन की बीमारी, न कोई मन की बीमारी। यह बताना चाहता हूँ कि आज की दुनिया में हम मन से बीमार ज्यादा हैं, तन से इतने नहीं। मैं उन युवाओं को प्रेरणा देना चाहता हूँ जो नशे की दुनिया में अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। राजयोग की मदद से हम अपने जीवन को नयी दिशा दे सकते हैं। मैं बाबा का बहुत शुक्रगुजार हूँ जिन्होंने मेरी इतनी मदद की। मेरी आप सभी से प्रार्थना है कि आप राजयोग अवश्य सीखें। ❖

भगवान ने भेजा दूत

❍ ब्रह्माकुमार प्रेम कलवानी, बिलासपुर

पारिवारिक समस्या, व्यवसायिक घाटा और अत्यधिक तनाव के कारण मैं बीमार रहने लगा था। डॉक्टरों के परामर्श अनुसार मैं टी.बी.की बीमारी से ग्रसित था। मेरा वजन उस वक्त 45 किलोग्राम था। मित्रों ने सलाह दी कि चिकन खाने से और बीयर पीने से सुधार होगा। एक वर्ष तक इस नुसख़े को अपनाने के बाद भी कोई सुधार नहीं हुआ। दुकान कर्ज में डूबने लगी। मुझे लगने लगा था कि मैं पागल हो जाऊँगा या फिर आत्महत्या कर लूँ। क्या होगा, कैसे होगा इन सवालों से मैं घिरा रहता था। दो हजार रुपयों की दवाइयाँ हर माह खाता था। राधास्वामी, गायत्री मंदिर, शारदा माता (कोखा) मंदिर, हरिओम सत्संग आदि कई स्थानों पर गया पर मुझे कहीं भी शान्ति नहीं मिली, तनाव कम नहीं हुआ। हर रविवार सिनेमा देखने जाता था, लाफ्टर क्लब भी जाता था पर तनाव कम नहीं हुआ।

दवाइयाँ बंद हो गई

तभी नया जीवन देने के लिए परमात्मा ने एक दूत भेजा। वह भाई उड़ीसा से आया था। उसने मेरी दुकान के सामने दुकान खोली। मैंने उसे बताया कि मेरे जीवन में बहुत चिंता, तनाव है, क्या करूँ? उसने कहा, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम जाने से सभी चिंताएँ समाप्त हो जाती हैं। मैंने आश्रम जाना शुरू किया। वहाँ का शान्तिपूर्ण वातावरण, बहनों का निस्वार्थ स्नेह, निस्वार्थ सेवाभाव, विनम्रता और अपनापन पाकर मन को बड़ी शान्ति और सुकून मिला। वहाँ म्यूजियम देखा और समझा, फिर सात दिन का राजयोग का निशुल्क कोर्स किया जिससे मेरा पूरा जीवन ही बदल गया। मैं प्रतिदिन ईश्वरीय महावाक्यों का अध्ययन करने लगा। तनाव खत्म होता गया। ज्ञान, योग, धारणा और सेवा से टी.बी.की बीमारी पूरी तरह ठीक हो गई। पूरी दवाइयाँ बंद हो गई।

आँखों में आ गये आँसू

एक साल बाद मधुबन (माउंट आबू) आया, यहाँ सभी भाई-बहनों की निःस्वार्थ सेवा, समर्पण भाव और शिवबाबा की रूहानी पालना से जीवन खुशहाल हो गया। वापस घर जाने लगा तो आँखों में आँसू आ गये। परमात्मा पिता ने मुझे नया जीवन देकर कलियुगी किचड़े से निकाल कर अपनी गोद में उठा लिया है । जो डॉक्टर मेरा इलाज करता था, उसने एक दिन पूछा, आजकल आप आते नहीं हो? मैंने बताया, राजयोग करने से मैं पूरी तरह स्वस्थ हो गया हूँ। उसने भी कहा, मैडिटेशन से मैडिसिन खाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अभी मेरा वजन 65 किलोग्राम है। वह भाई, जिसने ब्रह्माकुमारी आश्रम का पता बताया था, दुकान बंद करके वापस चला गया है। मतलब यह है कि बाबा ने मुझे नया जीवन देने के लिए ही वह दूत भेजा था।

मनोबल बढ़ गया है

मेरे दाहिने पैर में असहनीय दर्द होने लगा था। मैं खड़ा नहीं हो पाता था। दर्द के कारण रात भर छटपटाता रहता था, सो नहीं पाता था। अपोलो हॉस्पिटल में और शहर के बड़े-बड़े डॉक्टरों को दिखाया। सभी ने कहा, कमर से पैर तक जाने वाली नस दब गई है, ऑपरेशन करवाना पड़ेगा। मैंने आश्रम की बहनों को बताया। बहनों ने कहा, परमात्मा पिता की शक्ति की किरणों को अपनी नसों में बहते हुए देखना और महसूस करना कि मेरी नसें खुलती जा रही हैं। यह विजन क्रियेट करने से मेरा दर्द पूरी तरह समाप्त हो

गया। अब मेरा चेहरा हमेशा खिला रहता है। क्रोध समाप्त हो गया है। सहनशक्ति बढ़ गई है। मनोबल बढ़ गया है। समस्याओं का सामना करने की शक्ति मिल गई है। जीवन खुशहाल हो गया है। मुझे ऐसा लगता है कि संसार में मुझसे ज्यादा सुखी और खुश कोई नहीं है। रोज बाबा को पत्र लिखता हूँ। मेरे अंदर धैर्य आ गया है, क्यों, क्या, कैसे के सवाल समाप्त हो गये हैं। इतना अच्छा दैवी परिवार मिल गया है। दुकान पर जो कर्जा था वह बाबा ने चुक्ता करा दिया है। बाबा ने मोबाइल की एक और दुकान भी खुलवा दी है जिसे मेरा पुत्र संचालित करता है। मुझे जीवन जीने की कला ब्रह्माकुमारी आश्रम से मिली है।

खरोंच तक नहीं आई

एक रात दस बजे मैं अपने टू-व्हीलर से घर जा रहा था। अचानक गलत तरफ से एक कार आई और टक्कर मारकर चली गई। मैं थोड़ा दूर गिर गया। लोगों ने मुझे उठाया लेकिन खरोंच तक नहीं आई। बाबा ने मुझे बचा लिया। मेरी गाड़ी का केवल हैंडल बैंड हो गया था। सभी का जीवन खुशहाल हो जाये, मेरी यही शुभ भावना है इसलिए आश्रम से ज्ञानामृत लाकर दुकान में सभी ग्राहकों को देता हूँ और सभी को आश्रम भी लेकर जाता हूँ। ज्ञान देने के निमित्त सभी बहनों का धन्यवाद करता हूँ, इन्होंने निस्वार्थ स्नेह और अपनापन दिया जिस कारण मुझे नया जीवन मिला। धरती पर अगर स्वर्ग देखना हो तो मधुबन (माउंट आबू) आइये। ❖

पढ़ाई में बाबा की मदद

ब्रह्माकुमार ब्रज, कठलाल, नडियाद (गुजरात)

मैं पिछले एक साल से बाबा के घर नियमित रूप से मुरली (शिवबाबा के महावाक्य) क्लास में जाता हूँ। बाबा को देखकर मुझे बहुत शक्ति मिलती है। इस साल आठवीं कक्षा में मुझे चार विषयों में 100 में से 100 मार्क्स प्राप्त हुए। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। यह तो बाबा का कमाल है। परीक्षा के दिनों में मैं योग के समय अभ्यास करता था, 'मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ, बाबा से बहुत शक्तियाँ प्राप्त कर रहा हूँ, परीक्षा में बाबा मेरे साथ ही हैं, मेरा पेपर बहुत ही सरल आयेगा, मुझे सभी प्रश्नों के उत्तर याद आ रहे हैं, मुझे 100 में से 100 मार्क्स प्राप्त हो रहे हैं।' यह अभ्यास बार-बार करता था। इसी दृढ़ विश्वास के आधार से 6 में से 4 विषयों में 100 में से 100 मार्क्स प्राप्त हुए। बाकी दो विषयों में 100 में से 99 मार्क्स प्राप्त हुए। इसलिए कहूँगा–

ना ही गिनके दिये हैं, ना ही तोल के दिये हैं।
बाबा ने मुझे मार्क्स, दिल खोल के दिये हैं।।

पिताजी मुझे कई बार कहते थे, बेटा पढ़ाई में ध्यान दो, खेलकूद में ध्यान कम दो, फिर भी मैं खेलने चला जाता था और समय मिलने पर मन लगा कर पढ़ाई करता था। मुझे पक्का निश्चय था कि मेरा बाबा, मेरा सब अच्छा ही करेगा। सभी बच्चों से (स्टूडेन्टस् से) मेरा निवेदन है कि दिल से मेहनत करें और टी.वी.से मुक्त रहें तो ही बाबा की मदद मिलेगी। मैंने जब बाबा को पहचाना नहीं था तब बहुत ही क्रोध आता था लेकिन अब तो क्रोध भी मेरे से बहुत दूर चला गया है। सन् 2015 में मधुबन में बच्चों के कार्यक्रम में भी बाबा की बहुत मदद मिली। 'जीवन में सहयोग का महत्त्व' इस विषय पर वक्तृत्व स्पर्धा में मुझे प्रथम इनाम मिला था। ❖

जून, 2016 के अंक में पेज 3 पर प्रथम पंक्ति में जून 1964 के बजाय जून 1965 पढ़ा जाए

आध्यात्मिकता और कार्यस्थल

○ ब्रह्माकुमारी प्रीति खत्री, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)

आध्यात्मिकता को अधिकतर लोग सिर्फ मंदिर, मस्जिद, चर्च एवं गुरुद्वारों तक ही सीमित मानते हैं परन्तु आध्यात्मिकता सार्वजनिक जीवन के साथ-साथ कार्यस्थल पर हमारी कार्यप्रणाली में समाहित होनी आवश्यक है। वर्तमान में कार्याधिक्य, राजकार्य में राजनीतिक हस्तक्षेप, अधिकारियों की डांट/दबाव के चलते तनाव से उबरने के लिये आध्यात्मिकता ही ऐसा मार्ग है जो हमें सच्चा राजसेवक बनाती है, हमें जिम्मेदार, कर्तव्यनिष्ठ एवं सम्मानित कर्मचारी बनाती है। अत: यह धारणा पूर्णत: गलत है कि सरकारी कार्यालयों के भ्रष्ट एवं स्वार्थपूर्ण वातावरण में आध्यात्मिकता का कोई स्थान नहीं है जबकि वास्तविकता यह है कि आध्यात्मिकता का व्यवहारिक उपयोग सरकारी कार्यालयों के वातावरण को बदलने में भी सक्षम है। इसके लिए स्वयं की इच्छा शक्ति का दृढ़ होना आवश्यक है ।

सर्वप्रथम, प्रतिदिन कार्य की शुरूआत एक आध्यात्मिक लेख पढ़ने से करें ताकि दिनभर कार्य शांतिपूर्ण संपन्न हो एवं ज्ञानपूर्ण लेखों का अध्ययन कार्यालय के अन्य भाई-बहनों को भी कराएँ जिससे बाबा के ज्ञान का विस्तार हो।

आज 10-15 लोगों के समूह में भी राजनीतिपूर्ण वातावरण और चर्चाएँ देखने-सुनने को मिलती हैं किन्तु आध्यात्मिकता हमें ऐसे माहौल में रहते हुए भी न्यारा और प्यारा रहना सिखाती है जिससे हमारी अलग पहचान बनी रहती है।

कर्त्तव्य के प्रति समयबद्धता एवं एकाग्रता हमें सफलता दिलाती है जो आध्यात्मिकता से प्राप्त होती है।

आध्यात्मिकता हमें विभिन्न विचारधारा वाले साथी कर्मचारियों के साथ सामंजस्य बिठाकर कार्य करना सिखाती है जिससे सर्व के सहयोग के साथ-साथ आत्मसंतुष्टि भी मिलती है।

आध्यात्मिकता हमें शिष्टाचार एवं शालीनतापूर्ण व्यवहार करना सिखाती है जिसकी बदौलत हम उच्चाधिकारियों एवं निम्नस्तर के कर्मचारियों के साथ मर्यादापूर्ण वर्ताव करते हैं।

शिवबाबा का फरमान है कि मालिक बनकर राय दो और बालक बनकर बड़ों की राय/आदेशों की पालना करो, इस शिक्षा का व्यवहारिक सदुपयोग कार्यालय में अनुभव किया जा सकता है।

आध्यात्मिकता से प्राप्त अनेक स्वमानों को यदि हम प्रतिदिन अमल में लायें और स्वमान में रहकर कार्य करें तो सर्व के प्रति शुभ भावना बनी रहती है और कोई भी हमसे दुर्भावना की दृष्टि से व्यवहार करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

अक्सर कर्मचारियों की मनोवृत्ति रहती है कि जिस थाली में खाते हैं उसमें ही छेद करते हैं अर्थात् अपने ही कार्यालय की कार्यप्रणाली/अधिकारियों/साथी कर्मचारियों को कोसते रहते हैं। अच्छा हो यदि वे स्वयं की कार्यप्रणाली में सुधार लाकर पूरे कार्यालय की कार्यप्रणाली को सुधारें किन्तु उनमें यह समझ/हिम्मत नहीं होती। यदि हम आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलेंगे तो उससे प्राप्त समझ/हिम्मत से हम उक्त परिवर्तन की शुरुआत कर सकते हैं।

एक उदाहरण

एक महिला अधिकारी द्वारा बेवजह दुर्भावना से मुझे एक स्पष्टीकरण पत्र दिया गया जिसे पढ़कर मैं काफी आहत हुई। चूँकि मैं पूर्णत: निर्दोष थी इसलिए मैंने तुरंत ही उसका एक लंबा-चौड़ा प्रत्युत्तर देने का मानस बनाया

किन्तु तुरंत ही बाबा की टचिंग हुई कि बुरे संकल्प को दूसरे दिन पर टालना चाहिए। मैंने वही किया। दूसरे दिन मैंने अति संक्षिप्त एवं ज्ञानयुक्त प्रत्युत्तर लिखा एवं स्वयं के हाथों से उनको दिया जिसका काफी सकारात्मक प्रभाव रहा एवं मैं एक गलत कार्य करने से छूट गयी।

मेरा समस्त भाई-बहनों से विनम्र निवेदन है कि आध्यात्मिकता के मार्ग को अपनाकर अपने-अपने कार्यस्थल पर ऐसा माहौल बनायें कि हमारे द्वारा बाबा की प्रत्यक्षता हो एवं समस्त आत्माओं का कल्याण हो।

❖

बीमारी को सहने में बाबा की मदद

ब्रह्माकुमारी आरती वर्मा, बटाला (पंजाब)

फरवरी, 1992 में मेरी शादी हुई। थोड़े महीनों के पश्चात् पति मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम लेकर गए। इससे पहले मैंने कभी भी ब्रह्माकुमारी आश्रम का नाम नहीं सुना था। वहाँ मुझे बाबा का और बहनों का बहुत प्यार मिला। तब से मैं कोशिश करती हूँ कि कभी भी ज्ञान-मुरली मिस ना हो। सरकारी अध्यापिका हूँ, बच्चों को पूरी मेहनत के साथ पढ़ाती हूँ, कभी-कभी बच्चों को बाबा का परिचय भी देती हूँ। मेरी सेहत बिल्कुल ठीक थी। मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं थी। कई अध्यापक तो मुझे यहाँ तक कहते थे कि आपको कोई दवाई तो नहीं खानी पड़ती, हमें तो बी.पी., माईग्रेन.......की दवाई लेनी पड़ती है।

बीमारी कैंसर निकली

एक दिन हमारे स्कूल में रॉयल इन्स्टीट्यूट, कनाडा से कुछ डॉक्टर (प्रोफेसर), लड़कियों को छाती की बीमारी के विषय में समझाने आए। उनके आने के एक दिन पहले ही मुझे अपनी छाती पर हड्डी जैसी एक सख्त चीज का अनुभव हुआ था। जब डॉक्टर को दिखाया तो अच्छी तरह देखकर उन्होंने तुरन्त अन्य डॉक्टर से सलाह लेने के लिए कहा। मैं अपनी फैमिली डॉक्टर के पास गई। उन्होंने जांच के बाद मैमोग्राफी कराने की सलाह दी। मैमोग्राफी से पता चला कि मुझे ब्रेस्ट कैंसर है। पता चलते ही मैं और घरवाले बहुत ही घबरा गए। बीमारी की अभी पहली ही स्टेज थी। जब विशेषज्ञ को दिखाया तो उन्होंने ऑपरेशन के लिए कहा, ऑपरेशन का नाम सुनकर और भी डर लगने लगा।

बाबा सदा साथ हैं, तकलीफ नहीं होने देंगे

मुझे बाबा पर पूरा निश्चय है कि बाबा हमेशा मेरे साथ हैं और कोई भी तकलीफ नहीं होने देंगे। ऑपरेशन के दिन आश्रम के बहन-भाइयों ने योग किया। उधर अमृतसर में मेरा ऑपरेशन हो रहा था और बटाला में योग में बैठे-बैठे एक बहन को साक्षात्कार हुआ कि जैसे बाबा ही यह ऑपरेशन कर रहे हैं। ऑपरेशन के बाद जब होश आया तो लग रहा था कि मैं पहले की ही तरह हूँ और मेरा ऑपरेशन हुआ ही नहीं। मुझे कोई भी तकलीफ नहीं हुई। यह बाबा का कमाल नहीं तो और क्या है! मेरे जख्म भी जल्दी भर गए। इसके पश्चात् डॉक्टर ने मुझे कीमो थेरेपी की सलाह दी। कीमो थेरेपी के दौरान दूसरे बिस्तरों पर कइयों को बहुत ही तकलीफ में देखती थी पर बाबा ने मुझे कोई भी तकलीफ नहीं होने दी।

बिल्कुल ठीक हूँ अब

जब भी मैं डॉक्टर के पास जाती थी, मुझे महसूस होता था कि मेरे साथ ऐसी महान शक्ति है जो हर तकलीफ में मेरी रक्षा करती है। इतनी बड़ी बीमारी आई तो जरूर पर बाबा ने सहने में पूरी-पूरी सहायता की। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे कैंसर नहीं है। मैं सभी बहनों और भाइयों से यही कहूँगी कि जैसे बाबा ने हर कदम पर मेरा साथ दिया, ऐसे आप भी बाबा को अधिक से अधिक याद करो। समय बहुत ही कीमती है। इसको व्यर्थ मत गँवाओ और बाबा को हर समय अपने साथ अनुभव करो। ❖

विश्वास वह पंछी है जो प्रभात के पहले ही प्रकाश देखना शुरू कर देता है

कदम-कदम पर बाबा मेरा साथी

❍ ब्रह्माकुमार संदीप दूबे, धनवन्तरी नगर, जबलपुर

मैंने पांच वर्ष पूर्व जबलपुर (धनवन्तरी नगर) सेवाकेन्द्र पर शिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित शिविर में ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग सीखा और तब से आज तक बाबा का बच्चा हूँ। मेरी मां एक शिक्षिका और पिता सेवानिवृत्त फौजी हैं। मात्र 6 माह 20 दिन की अल्प अवधि में मथुरा के एक आर्मी हास्पिटल में मेरा अद्भुत जन्म हुआ, जन्म से ही मंदबुद्धि था। माता-पिता ने बड़ी बहादुरी के साथ पालन-पोषण किया। आज मेरी उम्र 36 वर्ष है। कुछ समय पहले एक दुर्घटना में मेरे पैर गंभीर रूप से फ्रैक्चर हो गये थे जिनमें ऑपरेशन के बाद स्टील रॉड लगी है। मेरी शिक्षा-दीक्षा आठवीं तक विकलांग सेवा भारती (चेतना) जबलपुर में हुई।

बच्चे, हिम्मत न हारना

मुझे बचपन से ही हरेक तरह की प्रतियोगिता में भाग लेने की उत्सुकता बनी रहती थी लेकिन मेरी विकलांगता को देखते हुये मुझे ज्यादातर हताशा ही हाथ लगती थी। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर बाबा की नियमित मुरली सुनने की आदत ने मेरे मन में उत्साह और हिम्मत भर दिए। बचपन से ही मुझे साइकिलिंग करने की ललक लगी रहती थी और इस ललक ने मुझे साइकिल चलाना सिखा दिया। अब मैं साइकिलिंग रेस प्रतियोगिता में भाग लेने के स्वप्न देखने लगा। सेवाकेन्द्र पर कभी-कभी स्वेच्छा और स्वप्रेरणा से छोटी-छोटी सेवा करने में बहुत खुशी मिलती और जब भी समय मिलता, चुपचाप योगकक्ष में बाबा से दृष्टि लेते हुये मन ही मन बातें करने लगता, 'मेरे प्यारे बाबा, आप मेरा हाथ और साथ कभी न छोड़ना।' कुछ समय बाद मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि कदम-कदम पर बाबा मेरा साथ निभा रहे हैं। बाबा की आवाज कानों में सुनाई देती थी कि मेरे मीठे बच्चे, 'तुम हिम्मत न हारना, तुम मेरे अनमोल रत्न हो, मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ।'

सम्मानित हुआ स्वर्ण पदक से

देखते ही देखते आखिर वह दिन आया जिसका मुझे इन्तजार था। एक दिन मुझे फोन पर बताया गया कि मैं विकलांग सेवा भारती का संचालक दीपांकर बनर्जी बोल रहा हूँ, इस संस्थान ने निर्णय लिया है कि तुम्हें वर्ष 2014 की नेशनल साइकिलिंग प्रतियोगिता के लिये ट्रेन्ड किया जाए। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने पूरी हिम्मत और उत्साह के साथ साइकिल चलाने का अभ्यास शुरू कर दिया और टेस्ट लेने के बाद संस्थान ने मेरा चयन राष्ट्रीय स्पेशल ओलिंपिक में कर लिया। भोपाल में, मध्यप्रदेश स्तर पर वर्ष 2014 में आयोजित स्पेशल ओलिंपिक प्रतियोगिता में लगातार 10 किलोमीटर साइकिलिंग रेस में मैंने प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया और मुझे स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इस खुशी को मैंने सबसे पहले प्यारे बाबा से शेयर किया और बाबा को दिल से धन्यवाद कहा।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयन

अब मैं धीरे-धीरे विदेश जाने की सोचने लगा। बाबा से मन ही मन बातें करता रहता, क्या बाबा मेरे जैसा विकलांग छात्र विदेश में ओलिंपिक में भाग ले सकता है? क्या मैं विदेश में अपने परिवार, अपने देश का नाम रोशन कर सकता हूँ? कुछ समय बाद मुझे एक दिन दीपांकर बनर्जी ने

खबर दी कि आपका चयन इन्टरनेशनल (अन्तर्राष्ट्रीय) साइकिलिंग रेस प्रतियोगिता के लिये कर लिया गया है। अब आप अपना अभ्यास दुगुना कर दो और विदेश जाने की तैयारी में लग जाओ। आपको अपने देश का नाम रोशन करना है।

भाई-बहनों ने किया विशेष योग

जब यह समाचार सेवाकेन्द्र पर प्रात:कालीन क्लास में सुनाया तो सभी भाई-बहनों ने तालियां बजाकर मुझे बधाई दी और अन्तर्राष्ट्रीय ओलिंपिक प्रतियोगिता में सफल होने के लिये बाबा से विशेष योग करते हुये मेरा मनोबल बढ़ाया। अब वह दिन भी नजदीक आ गया जब अमेरिका के लॉस एंजिलिस में 25 जुलाई से 2 अगस्त, 2015 तक आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय ओलिंपिक साइकिलिंग प्रतियोगिता में शामिल होने के लिये 10 सदस्यीय दल को अमेरिका ले जाना सुनिश्चित हो गया। अमेरिका जाने के पूर्व सेवाकेन्द्र पर ब्रह्माकुमारी बहन ने प्रात:कालीन क्लास में मेरा तिलक वंदन कर इस प्रतियोगिता में विजयी होने की कामना की। सभी भाई-बहनों ने मुझे खुशी-खुशी विदा किया। यह दल हबीबगंज (भोपाल) से ट्रेन द्वारा दिल्ली के लिये रवाना होकर हांगकांग के रास्ते अमेरिका पहुंचा। मुझे बाबा की याद बार-बार आने लगी, विदेश में पहली बार जाने का मौका मिला था। मेरी घबराहट बढ़ती जा रही थी। उसी समय बाबा की आवाज कानों में सुनाई देने लगी, बच्चे, घबराना नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूँ।

लंगड़े को दौड़ाया बाबा ने

अमेरिका के लॉस एंजिलिस में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय ओलिंपिक साइकिलिंग प्रतियोगिता प्रारंभ हुई और मैंने 10 किलोमीटर की साइकिलिंग रेस बड़ी सावधानी के साथ शुरू की। मेरी साइकिल लगातार दौड़ रही थी कि अचानक दूसरी साइकिल से टक्कर हो गई और मैं गिर पड़ा। देखा कि मेरी साइकिल का हेंडिल भी टूट गया, अब मेरी आँखों के सामने अंधेरा-सा छाने लगा। उसी समय बाबा का अहसास हुआ, जैसे बाबा कंधे पर हाथ रखते हुये कह रहे हों कि बच्चे खड़े हो जाओ। थोड़ी देर में क्या देखता हूं कि मेरा प्रतिद्वन्द्वी साथी कह रहा था, संदीप, तू मेरी साइकिल ले ले और दौड़ जा। अब मुझे मेरी मंजिल साफ नजर आने लगी। मैंने दुगुनी ताकत के साथ, बिना किसी दर्द, तकलीफ की परवाह के साइकिल दौड़ाते हुये 10 किलोमीटर की दौड़ समाप्त की। जब साइकिल से नीचे आया तो पाया कि इस रेस में द्वितीय स्थान पर विजयी रहा। अमेरिका के लॉस एंजिलिस द्वारा मुझे सिल्वर मेडल से सम्मानित किया गया। यह प्यारे बाबा की रहमत नहीं तो और क्या है! बाबा मैं किन शब्दों में आपका धन्यवाद अदा करूं! मैंने यह अवश्य सुना था कि जिस पर ईश्वर अनुग्रह करते हैं वो यदि अंधा हो तो देखने लगता है, बहरा हो तो सुनने लगता है, गूंगा हो तो गाने लगता है और लंगड़ा हो तो दौड़ने लगता है। मीठे बाबा, मेरे जैसे मंदबुद्धि को बुद्धिमान और लंगड़े को साइकिल रेस में दौड़ा कर आपने यह सच साबित कर दिया। क्या कमाल है बाबा आपकी! बाबा आपने मुझे देश-विदेश में जो प्रतिष्ठा व सम्मान दिलाया उसके लिये धन्यवाद बाबा!

भारत लौटने पर मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर के धनवन्तरी नगर के ज्ञान संजीवनी सेवाकेन्द्र के विशाल भवन में बड़ी संख्या में उपस्थित भाई-बहनों के बीच एक सादे समारोह में ब्रह्माकुमारी भावना बहन और साथी बहनों ने तिलक लगाकर मेरा स्वागत किया और मेरे उज्ज्वल भविष्य की कामना सभी भाई-बहनों ने की। अंत में यही कहूंगा कि मेरा जन्म, कर्म वंडरफुल और मेरा बाबा वंडरफुल।❖

कमियों की बलि लेना और सम्पूर्णता का बल देना – यह है शिव शक्तियों का कर्त्तव्य।

मेला और झमेला

❍ ब्रह्माकुमार प्रेम, डेराबस्सी

नये और सुन्दर कपड़े पहन, सूट-बूट सजा, आँखों में काजल लगाकर बच्चा अपने पिता के संग मेला देखने के लिये घर से निकला। अनेक खुशियाँ, इच्छाएँ, उमंगें तथा कल्पनायें दिल में लिये वह इठलाता, गीत गाता पिता की उँगली पकड़े मेले की ओर चला जा रहा था। उछल-कूद करते, मस्तियाँ मारते-मारते वह मेले में पहुँच गया। अभी मेले में भीड़ जरा कम थी तो वह कभी झूलों पर झूलता, कभी मनपसन्द चीजें खाता, कभी मनपसंद खिलौने खरीदता, इस प्रकार मेले का पूरा आनन्द लेने लगा।

छूट गई पिता की उँगली

देखते ही देखते मेले में भीड़ बढ़ गई। आखिर भीड़ के धक्के में बच्चे के हाथ से पिता की उँगली छूट गई। बच्चा बेबस हो गया तथा रोने-चिल्लाने लगा। मेले के धक्के सहन ना कर वह लाचार तथा परेशान होकर अपने पिता को पुकारने लगा। रोते-रोते कभी किसी की टांगों से चिपक जाता, जब देखता कि यह तो मेरा पिता नहीं है फिर उसे छोड़ दूसरे की टांगों में घुस जाता, रोता-चिल्लाता आगे बढ़ जाता। मेले का जो आनन्द था वह दुख, दर्द, अशान्ति तथा चिन्ता में बदल गया। रोते, भागते, पिता को ढूंढ़ते, धक्के खाते आखिर थक कर वह अचेत होकर गिर गया।

अब घर चलते हैं

शाम का समय हो चला था, मेला भी बिछुड़ने लगा था और पिता भी अपने बच्चे को ढूँढ़ रहा था। अचानक पिता ने देखा कि बहुत भीड़ के बीच एक बच्चा अचेत पड़ा है। जब ध्यान से देखा तो वह हैरान रह गया कि यह तो मेरा ही बच्चा है, जो अति सुन्दर कपड़े पहन, अनेक श्रृंगार कर मेरे साथ आया था। भीड़ में उसके कपड़े फट गये थे तथा श्रृंगार धूल-मिट्टी में बरबाद हो गये थे। पिता ने बच्चे को उठाया, उसके कपड़े झाड़े तथा कंधे पर उठा कर कहा, चल बेटे, अब घर चलते हैं क्योंकि यह मेला तो अब खत्म होने ही वाला है।

स्वर्ग का खूब आनन्द लिया

क्या आप जानते हैं कि वह बच्चा कौन है? नहीं जानते? तो मैं बताता हूँ, वह मैं हूँ या आप हैं या कोई दूसरा, तीसरा भी हो सकता है या कोई भी आत्मा हो सकती है। प्यारे भाई-बहनो, हम आत्माएँ भी यह संसार रूपी मेला देखने के लिए 5000 वर्ष पहले खूब शृंगार करके परमधाम से अपने पिता परमात्मा के पास से आए थे। सतयुग और त्रेतायुग में मेले में भीड़ कम थी तो खूब मौज-मस्ती की। हम उस समय सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म, सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम से भरपूर थे तथा 2500 वर्ष निर्भय, निर्विरोध, निश्चिंत, अद्वैत राज्य किया तथा स्वर्ग का खूब आनंद लिया। ना कोई फिक्र, ना किसी प्रकार का डर, बस आनंद ही आनंद था।

ढूँढ़ने लगे पिता परमात्मा को

फिर जब द्वापरयुग शुरू हुआ तो भीड़ बढ़ने लगी और हम आत्मा अपने पिता परमात्मा से बिछुड़ गई। ज्यों-ज्यों भीड़ बढ़ती गई त्यों-त्यों अनेक प्रकार के धक्के लगने लगे। दुख, चिन्ता, डर, बीमारी, परेशानी, अशान्ति, रोग, शोक के धक्के खाते हुए हम भी पिता परमात्मा को ढूँढ़ने लगे। कभी श्रीराम को पिता कहते, कभी श्रीकृष्ण को, कभी हनुमान जी को, कभी श्री लक्ष्मी-श्री नारायण को, कभी श्री विष्णु को, कभी श्री शंकर को, कभी नदियों को, कभी पेड़ों को, कभी पहाड़ों को, कभी कब्रों को तो कभी इन्सानों की भी पूजा करने लगे। कभी मन्दिरों में ढूँढ़ते हैं, कभी मस्जिद में, कभी गिरजाघर में तो कभी गुरुद्वारों में। हवन करते हैं, जगराते करते हैं, लंगर लगाते हैं, अनेक

प्रकार से दान, पुण्य आदि करते हैं कि हमें सुख-दाता पिता परमात्मा मिल जाये।

यही समय है मेरे आने का

जैसे परमपिता से बिछुड़ कर हम आत्माएँ दुखी हो रही हैं उसी प्रकार परमपिता को भी हम बच्चों पर तरस आ रहा है और वे भी हम आत्माओं की दुख भरी पुकार सुन, अपना परमधाम छोड़ कर सृष्टि में आ गये हैं और अपना परिचय इस प्रकार दे रहे हैं कि मेरा नाम शिव है, मैं अजन्मा हूँ, निराकार हूँ, अजर हूँ, अमर हूँ, अविनाशी हूँ, सचखण्ड का रहने वाला हूँ, मैं ज्ञान का सागर, सुख का सागर, प्रेम, दया का सागर हूँ, तुम सर्व आत्माओं का पिता हूँ, जो गुण मुझ में हैं वही तुम में भी थे परन्तु अब वे तुम में नहीं रहे, तुम निर्गुण हारे हो गये हो, मुझे तरस पड़ा और मैं परमधाम से आकर इस संसार में, संसारी के तन द्वारा तुम आत्माओं से मिल रहा हूँ। तुम आत्माएँ काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार आदि विकारों में गन्दी हो गई हो, ज्ञान रूपी साबुन से स्वच्छ बना रहा हूँ, तुम्हें सर्वगुण सम्पन्न देवता बना रहा हूँ, अब यह दुनिया बदलने वाली है, अब ईश्वरीय राज्य आयेगा जहाँ कोई भी दुखी नहीं होगा। मैं सर्व आत्माओं का पिता हूँ तथा सभी आत्मिक रूप में मेरे बच्चे हैं और सभी के मन की शुभ इच्छायें पूरी करना मेरा काम है। यह समय धर्मग्लानि का और मेरे आने का है। मैं तुम आत्माओं को ज्ञान अन्जन दे रहा हूँ। अगर तुम ही ज्ञान को ना समझो तो इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। यह मेला तो अब खत्म हुआ कि हुआ सो मैं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त का ज्ञान दे रहा हूँ।

अभी पृथ्वी पर अच्छे दिन आने वाले हैं परन्तु इससे पहले ये बुरे दिन भी तो जाने वाले हैं। यही वह समय चल रहा है जिसके लिए कहा गया है, नर ऐसी करनी करे जो श्री नारायण बन जाए और नारी ऐसी करनी करे जो श्री लक्ष्मी बन जाए।❖

जेल में नया जन्म

एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म होने के बाद गरीबी व घर का बड़ा सदस्य होने के कारण पढ़ाई हो नहीं सकी, गायों को पालने व चराने में ही जीवन व्यतीत करता रहा। भक्ति में अत्यन्त रुचि थी। निमंत्रण पर जाकर दिन-रात नाम कीर्तन भी करता रहा। जिन्दगी की सबसे बड़ी घटना हुई कि सी.पी.एम.पार्टी के नेता से तंग होकर, क्रोध के अधीन होकर उसे जान से मार दिया। पुलिस ने 18 दिनों तक ढूँढ़ा, बाद में गिरफ्तार हो गया।

फैसले में उम्रकैद की सजा 2001 में हो गई। जेल में हर वक्त आत्मिक ग्लानि होती रहती थी। जेल में रविशंकर प्राणायाम भी किया परन्तु आत्मसंतुष्टि नहीं मिली। आसन आदि से कोई बदलाव नहीं आया।

सन् 2007 में जिन्दगी के सबसे खुशहाल एक दिन, एक देवी व देवता के रूप में दो सफेद वस्त्रधारी जेल में आत्मज्ञान व परमात्मा की सत्य पहचान देने आये। उसी दिन यह महसूस हुआ कि जिन्दगी का चिराग नहीं बुझा है। मेरी हिम्मत बढ़ गयी। जिसको पाने के लिए दर-दर भटका वो मिल गया। नया जन्म जेल में हो गया।

केस इतना बड़ा था कि हमेशा कोर्ट में वापस हो जाता था। ब्रह्मा बाबा ने साक्षात्कार कराया कि बच्चे, घबराओ मत, बाप बैठा है। अन्त में जेलर, सुपरिन्टेन्डेंट व आई.जी.(विद्या हुसैन महन्ती) ने सुधरने का सर्टिफिकेट दे दिया। एक ब्रह्माकुमार के रूप में मैंने फिर से सुनहरी जिन्दगी की शुरूआत कर ली।

ब्रह्माकुमार वटकृष्ण तराई, भिवंडी पीसपार्क

जीवनदायी जल को दें जीवनदान

ब्रह्माकुमारी श्वेता, शान्तिवन

'जल ही जीवन है', 'जल है तो कल है' जैसे सुवाक्य मानव सभ्यता के लिए जल के महत्व को परिलक्षित करते हैं। मानवीय आवश्यकताओं की अधिकतम पूर्ति जल के माध्यम से ही संभव है। खाद्यान्न उगाने से लेकर उन्हें पकाने, वस्त्र तैयार करने से लेकर उन्हें पहनने, शरीर को साफ करने एवं शारीरिक क्रियाओं को संचालित रखने, घर बनाने से लेकर उसे रहने योग्य रखने तक, हर तरफ हर चीज में जल बहुत उपयोगी बनता है। अन्नाभाव की स्थिति से उत्पन्न परिस्थितियों से अधिक भयावह है जलाभाव की स्थिति।

कारण छिपा है मानवीय वृत्ति में

वर्तमान विश्व जलाभाव की विकट स्थिति की ओर तेजी से बढ़ रहा है। जो धरती सदियों से माँ के रूप में अपने आँचल में इस अमृत-संपदा को सहेजती-समेटती आई है, उसकी झोली खाली हो रही है, जलस्तर निरंतर गिरता जा रहा है, आखिर क्यों? भौतिक और प्राकृतिक कारण अनेक गिनाये जा सकते हैं जैसे तापमान में बढ़ोतरी, बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, वर्षा-जल की कमी, जल के उचित संरक्षण का अभाव, वनों का कटाव, जल-बरबादी इत्यादि। परन्तु अगर गहराई से देखा जाये तो इसका एक बहुत सूक्ष्म आध्यात्मिक कारण भी है– मानवीय सद्वृत्ति में आई गिरावट। आज मानव के दया के, प्रेम के, शान्ति के भण्डार सूख गये हैं तो क्या आश्चर्य है कि प्रकृति के जल-भण्डार सूख गये हैं! बंजर होती धरती, बंजर होते मानव जीवन का बाहरी प्रगटीकरण ही तो है।

एक समय था जब इस धरती पर रहने वाले शान्ति, स्नेह और शीतलता के अवतार थे। उनमें दया की, देने की भावना थी इसलिए वे देवता कहलाते थे। तब पशु-प्राणी मिलजुल कर रहते थे, प्रकृति के पाँचों तत्व सम्पन्न और संतुष्ट थे। जल भण्डार भरपूर थे और जल दूध-घी की तरह पवित्र और पुष्टिकारक था। आज चहूँ ओर काम-क्रोध की ज्वाला धधक रही है, बेगुनाह मूक प्राणियों का खून पानी की तरह बहाया जा रहा है। आखिर इसका परिणाम और क्या होगा?

मानवीय वृत्ति का प्रकृति पर प्रभाव

प्राचीन समय से कहावत है कि 'जहाँ क्रोध है उस घर के पानी के मटके भी सूख जाते हैं।' इससे स्पष्ट है कि पहले के लोग भी इस तथ्य को अच्छी तरह से जानते और मानते थे कि मानव की वृत्ति का, स्वभाव का प्रभाव चारों ओर की प्रकृति पर पड़ता है। क्रोध का ताप अग्नि के ताप से भी अधिक प्रभाव डालता है। आज तो मानव के भीतर क्रोध की गरमाई बढ़ती जा रही है। सिर्फ क्रोध की आग नहीं लेकिन विषय-वासना के अंगारे, नफरत की चिंगारी, लोभ-लालच की लपटें, ईर्ष्या की अग्नि में मानव झुलस रहा है। इतने भयावह मानसिक ताप और संताप ने पृथ्वी ग्रह के जल के भरे स्रोतों को सुखा दिया है।

जल रहा मानव आज,काम-क्रोध के दावानल में।
तो जल कहाँ बचेगा, धरती माँ के आँचल में।।

जब मानव की सोच में संकीर्णता आती है तो पंच तत्व भी देने में संकीर्ण बन जाते हैं। हम सभी ने बचपन में यह लोककथा सुनी है कि एक बार एक राजा अपने राज्य के भ्रमण पर निकला। उसने देखा कि खेतों में ईख की फसल लहलहा रही थी। राजा ने किसान के सामने उसकी मेहनत और अच्छी फसल की बहुत प्रशंसा की। किसान बहुत खुश हुआ, दौड़कर खेत में गया और कुछ ही देर में ईख का ताजा रस गिलास भरकर राजा के सामने प्रस्तुत किया। राजा को वह बहुत मीठा व स्वादिष्ट लगा। अचानक राजा को ख्याल आया कि इतने स्वादिष्ट रस का आनन्द प्रजा ले

रही है! इस पर तो एकमात्र राजा का अधिकार होना चाहिए, प्रतिदिन यह महल में आना चाहिए। यह विचार करते हुए राजा ने किसान से एक गिलास रस और पीने की इच्छा व्यक्त की। किसान खुशी-खुशी खेत में गया और काफी समय बाद वापस लौटा। वह बहुत परेशान और घबराया हुआ लग रहा था। उसने कहा– ''महाराज, गजब हो गया, न जाने गन्ने में से रस कहाँ चला गया, बहुत कोशिश करने के बाद भी सिर्फ आधा गिलास रस ही प्राप्त कर सका।'' राजा को भी बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन बुद्धिमान राजा अपनी भूल समझ गया और उसने ऊँचे स्वर में किसान को संबोधित करते हुए कहा– ''हे खेतिहर! इस रस का लाभ मेरी समस्त प्रिय प्रजा को मिलते रहना चाहिए इसलिए यदि ईख की खेती पर कोई लगान आदि देना पड़ता है तो मैं उसे माफ करता हूँ।'' इस बार जब राजा ने किसान को भेजा तो वह खुशी-खुशी रस का भरा गिलास लेकर लौटा। इस कथा से हमें एक गंभीर सत्य का इशारा मिलता है कि यदि मानव स्वयं को बदल ले, अपनी वृत्तियों का सुधार कर ले तो इस संसार में अन्न-जल के भण्डारे भरपूर हो जायेंगे।

राजयोग का अभ्यास-दुष्प्रवृत्तियों का नाश

वृत्तियों का सुधार संभव है राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से। यह एक अति सहज मानसिक प्रक्रिया है जिसमें मन को विचारशून्य नहीं करना लेकिन सकारात्मक बनाना है। सकारात्मक सोच जीवन के प्रत्येक पहलू पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। एक राजयोगी स्वयं को अपने मूल शुद्ध आत्मस्वरूप में देखते हुए सर्वशक्तियों और गुणों के स्रोत परमात्मा के परम पवित्र ज्योतिस्वरूप पर अपने मन-बुद्धि को एकाग्र करता है। इस एकाग्रता से मन एक पवित्र और सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है जिससे कमजोरी और नकारात्मकता नष्ट होने लगती है और सर्व के भले की भावनाएँ मन में उमड़ने लगती हैं। राजयोगी से पवित्रता, सुख, शान्ति के प्रकम्पन चारों ओर फैलते हैं जिससे प्रकृति सहित सर्व प्राणी सुख-चैन का अनुभव करते हैं।

पानी सम बने प्राणी

पानी न केवल धरती पर रहने वाले प्राणियों के जीवन का आधार है बल्कि विशेषताओं का भी भण्डार है। जल की बहुत सारी विशेषताओं में से एक अद्‌भुत विशेषता है– एकात्मकता। जल चाहे पोखर का है, चाहे नदी का, चाहे सागर का, जब उसे मिला दिया जाता है तो वह एक हो जाता है, उसको अलग नहीं किया जा सकता। अनेक से एक हो जाने की, आपस में घुलमिल जाने की इस विशेषता को यदि हम अपने परिवार में, संगठन में, समाज में अपना लें तो न कोई भेदभाव होगा, न क्लेश; न कोई दुविधा होगी, न द्वेष; बस सच्चा प्रेम ही रहेगा शेष।

आओ करें जल की सेवा

किसी प्यासे को पानी पिलाना बहुत पुण्य का कार्य समझा जाता है। इसके लिए ही लोग गर्मियों में प्याऊ इत्यादि लगवाते हैं अथवा बस-स्टैण्ड या रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को प्यार से पानी पिलाने की सेवा करते हैं। कोई घर में आता है तो सर्वप्रथम उसे स्नेह-सम्मान से पानी प्रस्तुत किया जाता है। यदि किसी के संबंध ठीक न हों तो अक्सर यह कहते सुना जाता है कि उसने तो हमें पानी तक भी नहीं पूछा। जल-सेवा अर्थात् 'जल से सेवा' करने में जिस प्रकार से भावना व तत्परता दिखाई जाती है, उसी प्रकार से आज 'जल की सेवा' करने की आवश्यकता है और वह सेवा हो सकती है स्वयं को जल जैसा निर्मल और सर्व-हितकारी बनाकर, अपनी शुभभावनाओं द्वारा संसार में प्यार और सद्भाव के वायब्रेशन फैला कर। मनुष्यात्मा के वायब्रेशन को जल तुरन्त ग्रहण कर लेता है। इसीलिए,

आओ बहाएँ शान्ति-सरिता
और बढ़ाएँ दिल का प्यार।
तभी बचेगी जल-संपदा,
भर जायेंगे जल-भण्डार।

प्रभुपथ दिखाने वाली मेरी गुरुमाता

❍ ब्रह्माकुमारी तृप्ति, सूरत (वराछा)

हर इन्सान के जीवन निर्माण में माँ का विशेष योगदान होता है। महापुरुषों के जीवनचरित्र से यह सत्य प्रमाणित होता है। महात्मा गाँधी जी जब पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड गये थे तब उनकी माता पुतली बाई ने माँस-मदिरा का स्पर्श न करने और स्त्री-संग से दूर रहने की प्रतिज्ञा करवाई थी जो उन्होंने जीवनपर्यंत निभाई थी।

मुझे ईश्वरीय पथ में जीवन समर्पित करने की प्रेरणा मेरी माँ से प्राप्त हुई। सिर्फ मुझे ही नहीं और भी अनेक आत्माओं को आध्यात्मिक मार्ग दिखाने वाली उस प्रभुपसंद आत्मा की ईश्वरीय लगन के बारे में कुछ कहने का मन इसलिए हो रहा है कि यह चर्चा अनेक आत्माओं में उमंग-उत्साह भर सकती है।

उनकी प्रभुप्रीति, सेवा के लिए अद्‌भुत लगन, योगी जीवन प्रति सावधानी, अंतर्मुखता, नम्रता, सरल स्वभाव एवं बड़े परिवार को स्नेह-सूत्र में बांधकर रखने की विशेषता, यह सब कुछ देख-देख सीखती रही हूँ। उनकी पालना धनवान परिवार में हुई थी। शादी के बाद ससुराल में आकर देखा कि विशाल संयुक्त परिवार और कमाई अल्प है। मेरे पिता (विपिन भाई) की रेलवे में साधारण तनख्वाह की नौकरी ही 18 सदस्यों के परिवार को पालने की एकमात्र स्त्रोत थी। इसलिए पति की आर्थिक रूप से सहयोगी बनने का उन्होंने निर्णय कर लिया। ससुराल में रहकर ग्रेज्युएशन की, बी.एड. की। अलग-अलग शहरों में शिक्षक की नौकरी की। बड़े परिवार को स्नेहपूर्वक संभालना, घर की आवश्यकताएँ पूर्ण करना, नौकरी के साथ बच्चों की देखभाल – तीन-तीन मोरचे वे एक साथ संभालती थीं। कुछ समय पश्चात् चौथा मोरचा खुला जो उन्होंने अंत तक बड़े प्यार से संभाला, वो था ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनना।

सन् 1978 में राजकोट शहर में शास्त्री मैदान में 'युग नवनिर्माण आध्यात्मिक मेले' का आयोजन हुआ था। इस मेले द्वारा हमारे परिवार का अलौकिक जन्म हुआ। सर्वप्रथम माताजी ने प्रभुमय जीवन की राह चुनी। देखते ही बनता था उनका ईश्वर (शिव बाबा) के प्रति अपार प्रेम, समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनों के लिए अति सम्मान और ईश्वरीय सेवा प्रति अद्‌भुत लगन। बस में हों या ट्रेन में, सम्पर्क वालें हों या स्वजन, स्कूल के विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता... जो भी मिलें, उनको दिल से, भावना से बाबा का संदेश देती थी। जैसे सूर्य प्रकाश देने का कर्त्तव्य हर रोज नियमित रूप से करता ही रहता है, उसी प्रकार से यह आत्मा घर का कारोबार पूरा करके रोज सुबह 9.00 बजे के बाद अचूक सेवार्थ निकल जाती थी। इस बीच कहीं सफेद मंडप (किसी की मृत्यु का प्रसंग) देख लेती, फिर तो पूछना ही क्या? मानो सरस्वती माता उनके घर पहुँच जाती थी। उनके आँसू पोंछती, बड़े प्यार से आश्वासन देती। अन्जान होते हुए भी आस-पास के लोगों को इकट्ठे करके कहती, चलो, हम सभी आत्मा की शान्ति और सद्‌गति के लिए सत्संग करें। मृत्यु प्रवचन के बाद सप्ताह कोर्स के लिए प्रोत्साहित करती, गीता पाठशाला की नींव डालकर ही दम लेती। इस तरह अनेक गीता पाठशालाएँ खोलने के निमित्त बनी। न निमंत्रण की आशा, न तो प्रशंसा की अपेक्षा, एकदम न्यारी आत्मा। दिल में बाबा-बाबा की स्मृति और ईश्वरीय सेवा, यही जीवन-मंत्र।

मुझे हमेशा कहती, 'बेटा, अपने संबंध-संपर्क में आने वाली एक भी आत्मा अगर ईश्वरीय संदेश से वंचित रही तो उसका बोझ हमारे मस्तक पर चढ़ता है और यह बोझ कोई छोटा-मोटा नहीं है।' जब मैं और माँ साथ में बस में जाते थे तब वे मुझे अपने साथ बैठने नहीं देती थी, अलग सीट पर बैठने के लिए कहतीं और प्यार से समझाती कि मेरे पास जो आत्मा आकर बैठेगी उसे मैं समझाऊँगी और तुम्हारे पास जो आत्मा आकर बैठे, उसे तुम संदेश देना, एक ही समय पर डबल सेवा होगी ना! सेवा की लगन और उमंग-उत्साह से भरे उनके शब्द आज भी मेरे कानों में गूँजते हैं। लौकिक परिवार या समाज में कहीं सगाई, शादी हो तब भी वो अपने रूहानी व्यापार में ही व्यस्त रहतीं। मैंने हमेशा देखा, माताजी जब भी घर से बाहर निकलती तो हाथ में प्रदर्शनी अंक, शिव संदेश पुस्तिका या कोई न कोई साहित्य होता ही था।

सादगी, बचत, सच्चाई, कर्त्तव्यनिष्ठा, श्रीमत और ईश्वरीय स्मृति के साथ उड़ती कला के आकाश में विहार करती रहती। मैंने माताजी को अपने शौक के लिये, अपनी कमाई का एक रुपया भी उपयोग करते हुए नहीं देखा। सस्ती साड़ी, साधारण पर्स और सस्ते चप्पल पहनकर वे रोज सेवा के लिए निकल जाती, किराए के पैसे खर्चने के बदले कहती, 'चलो पैदल चलें, तंदुरुस्ती बढ़ेगी और यज्ञ का धन भी बचेगा।' 'ये मेरी कमाई के पैसे है', ऐसे शब्द उनके मुख से मैंने कभी नहीं सुने। उनकी नस-नस में रक्त प्रवाह के साथ प्रभुप्रेम और सेवा की लगन की धारा अविरत बहती रहती थी, उनके बारे में जितना कहूँ उतना कम है। मोहजीत बनकर मुझ लाडली बेटी को यज्ञ-सेवा में समर्पित कर देने की हिम्मत रखने वाली और मुझे प्रेरणा देने वाली गुरु समान माँ को मेरा शत-शत प्रणाम।

जब मेरी आयु 10 या 11 वर्ष की थी तब वे ज्ञान में आयी। थोड़े ही समय में अन्नशुद्धि, नित्य मुरली, अमृतवेले का योग और पवित्रता की धारणा – इन मूल व्रतों को उन्होंने दृढ़ता से जीवन में धारण कर लिया। अमृतवेले मुझे प्रेम से जगाना उनका नित्यक्रम था, 'बेटा, अमृतवेला हो गया, उठो, अब बाबा हमारी राह देख रहे हैं।'

रूहानी स्नेह से भरपूर उनके मीठे बोल अभी भी मेरे रोम-रोम को रोमांचित कर देते हैं। मेरे मानसपटल पर अमृतवेले के संस्कारों को ऐसा दृढ़ कर दिया कि समर्पित जीवन की संतुष्टता और ईश्वरीय सेवा की वृद्धि में बाबा की मदद और छत्रछाया सदा ही महसूस करती रही हूँ। अंतिम समय से पूर्व उनको दो बार हार्ट-अटैक आया। दोनों बार बच गई। निश्चित ही बाबा की सेवा में अभी उनका पार्ट बाकी रहा होगा। उन्हें आभास हो गया था कि अब विदाई की घड़ियाँ नजदीक आ रही हैं। 'अब वापिस घर जाना है' यह मंत्र वो स्मृतियों में लाया करती होंगी। मृत्यु तीव्र वेग से उनके समीप आ रही थी। राजकोट के वोकहार्ट हॉस्पिटल में उन्हे भर्ती करने का समाचार सुनकर मैं मिलने पहुँच गई। दोनों किडनी फेल, लीवर भी बेकार, हृदय में सिर्फ 10 से 15 परसेन्ट धड़कन। गले में, हाथ में, छाती पर, हर जगह लम्बी सूई और नलियों से अनेक छेद पड़ गये थे, आवाज मंद पड़ गई थी। मैं पूछती, 'माँ बहुत दर्द हो रहा है क्या?' उत्तर में चेहरे पर खुशी और बाबा, बाबा, बाबा का अनहद नाद।

एक सुबह वरिष्ठ कार्डियोलोजिस्ट डॉक्टर राउन्ड पर निकले थे, सरस्वती माता ने उन्हें प्यार से बुलाकर धीमी आवाज में कहा, डॉक्टर साहब, आप बड़े डॉक्टर तो बन गये हैं, अब आपको सतयुगी विश्व महाराजन बनना है। मैंने देखा कि इतने बड़े अनुभवी डॉक्टर बच्चे की तरह माताजी की हाँ में हाँ मिलाते हुए सिर हिला रहे थे। माँ ने जल्दी से 'परमात्मा इस धरती पर आ चुके हैं' शीर्षक वाला पर्चा देते हुए कहा, डॉक्टर साहब, ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा को पहचान कर 21 जन्मों का सतयुगी वर्सा ले लो। सात दिन का कोर्स कर लेंगे तो धन्य हो जायेंगे, गैरन्टी के साथ कहती हूँ, सतयुगी विश्व महाराजन अवश्य ही

बनेंगे! ऐसी थी ऑथॉरिटी वाली उनकी सेवा।

हॉस्पिटल में काम करने वाली नर्स, सफाईकर्मी आदि सभी को प्रभुप्रसाद के साथ शिवसंदेश पुस्तिका, पेन, कीचेन इत्यादि भेंट स्वरूप देती रहती थीं। मुझे महसूस हुआ कि थोड़े दिनों की हॉस्पिटल की चिकित्सा भी ईश्वरीय सेवा में सार्थक हो रही है। हर रोज राजकोट के विभिन्न सेवाकेन्द्रों की समर्पित बहनों तथा अन्य ब्र.कु.भाई-बहनों का आना-जाना लगा रहता था जैसे कि हॉस्पिटल ही सेवाकेन्द्र बन गया हो! मैं उन सभी टीचर्स बहनों एवं ब्र.कु.भाई-बहनों की आभारी हूँ जिन्होंने अति कर्मभोग के समय में माताजी को योग का सहयोग, स्नेह का सहयोग, सहानुभूति का सहयोग दिया। मैं रोज उनको मुरली सुनाती। वो कहती, 'स्वस्थ होकर घर आने के बाद रोज की मुरली पढ़कर मुझे महत्त्व के महावाक्य डायरी में लिखने होंगे।' ऐसी थी मुरली के प्रति उनकी लगन।

आई.सी.यू.में उनके अंतिम क्षण थे। इसका आभास उन्हें हो चुका था। शांतिपूर्वक उन्होंने कुछ शब्द कहे, 'देखो, बाबा मेरे सामने आ रहे हैं, मुझे लेने, बाबा ने मेरी सारी पीड़ा हर ली है। बाबा मेरे में समा गये हैं।' उसी दिन शाम के समय डॉक्टर राउन्ड पर आये, माताजी ने हंसते चेहरे से डॉक्टर को दृष्टि दी। डॉक्टर ने कहा, 'मैं हर पेशेन्ट का चेहरा देखता हूँ, वे सदा दुखी, उदास, गंभीर और मृत्यु की आशंका से भयभीत होते हैं, एक यही पेशेन्ट हैं जो इतनी पीड़ा होने के बावजूद रोज मुझे खुशी-खुशी बुलाती हैं।'

प्रसन्न चेहरा और आत्मिक दृष्टि द्वारा हो रही उनकी सेवा से हॉस्पिटल के स्टाफ में उनके प्रति बहुत आदरभाव पैदा हो गया था। जिन्दगी भर की उनकी निस्वार्थ सेवा का यह फल था। अब तो वो 8-10 चम्मच खुराक भी मुश्किल से ले पाती थी। शरीर में अतिशय कमजोरी, बोलने की शक्ति खत्म। मेरा जीवन बनाने वाली, स्नेह से सींचने वाली वो मेरी जननी थी। उनकी चिर विदाई मेरे लिये असह्य थी। परन्तु इस परीक्षा में पास होने का संपूर्ण यश बाबा की निरंतर मदद को और पूर्णिमा दीदी को जाता है। वे फोन द्वारा प्रतिदिन प्रेरणादाई प्रसंग सुनाकर खूब हिम्मत भरती रहीं। इसी के परिणामरूप माताजी की अंतिम विदाई के समय चारों तरफ के करुण रुदन के बीच भी मेरी शांत स्थिति और आँसू-रहित आँखें थी। विदाई का दिन भी सत्गुरुवार था। बाबा के घर का जल मुख में स्वीकार कर मेरी जन्मदाता ने अंतिम श्वास छोड़ा और बाबा की गोद ली।

उस आत्मा की श्मशान यात्रा में श्वेत वस्त्रधारी ब्र.कु.भाई-बहनें, परिवार के सदस्य, उनसे पढ़े हुए विद्यार्थीगण आदि सभी सजल आँखों से शामिल हुए थे। दुनिया के लोग अचरज के साथ इस शान्तियात्रा को निहार रहे थे। स्कूल शिक्षिका होने के कारण केवल रविवार ही उनके लिए छुट्टी का दिन होता था। हर रविवार को परिवार का भोजन बनाकर, खुद का टिफिन लेकर सुबह से शाम तक श्मशान में आने वाले लोगों को बाबा का ज्ञान सुनाती। बस, उसी श्मशान में उनका अंतिम संस्कार हुआ। एक ओर उनका नश्वर देह अग्नि की ज्वाला में विलीन हो रहा था और दूसरी तरफ मैं अंतिम यात्रा में आये हुए अनेक लोगों के बीच मृत्यु और जीवन के बारे में प्रवचन कर रही थी। वे सूक्ष्मरूप से इस दृश्य को देख बहुत खुश हो रही थी, ऐसा मुझे अनुभव हुआ। मेरे दिल की आरजू है कि ऐसी प्रेममूर्ति, निस्वार्थ सेवाधारी, संस्कार-मूर्ति मेरी गुरुमाता बार-बार मुझे जननी के रूप में मिले।

इस आत्मा को श्रद्धांजलि देने अनेक वरिष्ठ बहनें तथा भाई पधारे। मेरी गुरु समान माँ ने दीप समान चारों ओर प्रकाश और अगरबत्ती के समान खुशबू फैलाने वाला जीवन जीया। स्थूल देह से विदाई लेने के बाद भी वे स्मृति रूप से अनेकों के दिलों में चिरकाल तक जीवंत रहेंगी। ❖

इंसान समझदार तब नहीं होता जब वह बड़ी-बड़ी बातें करने लगे बल्कि समझदार तब होता है जब वह छोटी-छोटी बातें समझने लगे।

संविधान के बारे में अन्य धर्मों और राष्ट्रों का इतिहास

❍ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

संविधान के बारे में हम चर्चा करें, उसके पहले विदेशों एवं अन्य धर्मों में संविधान के विस्तार के बारे में विचार करेंगे। भारत में तो शिवबाबा के ज्ञान के आधार पर तथा मनुस्मृति के आधार पर शुरूआत से ही विश्वमहाराजा-महारानी का कारोबार चलता था। हम पहले मानते थे कि भारत में विश्व महाराजा का एक ही राज्य व परिवार होगा परंतु मातेश्वरी जी जब मुंबई में श्री लक्ष्मी-श्री नारायण का चित्र बनवा रहे थे तब बैकग्राउण्ड में दो महल दिखाए थे। दोनों महलों के ऊपर दो झंडे लहरा रहे थे। तब हमें शिवबाबा ने बताया कि वहाँ एक राजधानी में एक महल होता है। लक्ष्मी दूसरे राज्य के राजा की बच्ची होती है, तब ख्याल आया कि सतयुग में भी विभिन्न प्रकार के राजा, महाराजा, विश्व महाराजा होंगे।

भारतीय शास्त्रों के अनुसार जब पहले राम फिर कृष्ण आदि का दिव्य अवतरण हुआ था तब इसी कारण भारत में राजाशाही थी, वहाँ पर संविधान की शुरू में जरूरत नहीं पड़ी। इसीलिए शास्त्रों में श्लोक है – 'न दंडो न दंडिका: धर्मेणहि प्रजा रक्षति परस्परम्।" अर्थात् न कोई दंडित था, न कोई दंड देने वाला था, धर्म और प्रजा परस्पर एक-दूसरे की रक्षा करते थे। वहाँ कानून की इतनी जरूरत नहीं पड़ती थी और संसार सुखस्वरूप आगे बढ़ता रहा। द्वापरयुग से अन्य धर्म आए और इसी कारण अद्वैत से द्वैत हो गया अर्थात् राज्य कारोबार में संविधान व कानून की जरूरत निर्माण हुई। भारत जब अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ, तब अनेक स्थानों पर और भी छोटे-बड़े राजाओं का कारोबार चलता था। फिर राजाओं से राजाई, जमीन और जागीर ले ली गई, बदले में वार्षिक (सालाना) धनराशि बाँध दी गयी, बाद में वह भी सरकार ने बंद करा दी। इस प्रकार भारत में राजाशाही का अंत हो गया। नेपाल में राजाशाही थी, अब वहाँ भी प्रजा का प्रजा पर राज्य है परन्तु स्थिर सरकार की रचना नहीं हो पायी। नेपाल में जब से प्रजातंत्र बना है तब से अब तक 14 व्यक्ति बड़े प्रधान बने हैं।

भारतीय धर्मों के गणित के बारे में एक विचार का सूत्र नहीं है। मिसाल के तौर पर राजा दशरथ ने 36 हजार वर्ष राज्य किया जबकि राम को सिर्फ 14 वर्ष का वनवास मिला। हम इस राजगणित में नहीं जाते बल्कि काल की गिनती में जाते हैं जो पश्चिम में एक के बाद एक धर्मस्थापक पृथ्वी रूपी रंगमंच पर आने लगे। अब्राहम द्वारा इसलाम धर्म की स्थापना हुई। मोजीस द्वारा यहूदी धर्म की स्थापना हुई और कइयों के तन में धर्मस्थापक की आत्मा अलग से आयी जैसे मोजीस के 10 कमान्डमेन्ट्स शिलान्यास के रूप में मिले जिसके अंदर धर्मों के द्वारा कैसे कारोबार होना चाहिए, वह समझाया। मोजीस द्वारा भी अनेक प्रकार के चमत्कार हुए जैसे कि वे अपनी शिष्य-मंडली को लेकर जा रहे थे तब पीछे से उन्हें मारने के लिए राजा के घोड़ेसवार सैनिक आ रहे थे, तब मोजीस ने नदी के पानी का बहाव रुका दिया और पैदल चलते हुए नदी को पार कर वे सब दूसरे किनारे पहुँच गये। फिर मोजीस ने नदी का बहाव पुन: शुरू करा दिया। तब नदी पर चलने वाले राजा के सैनिक जो मोजीस व उनके शिष्यों को मारने के लिए आ रहे थे, पानी के बहाव में बह गये। अधिकतर धर्मों की रचना व स्थापना शुरू से राजाशाही के द्वारा ही हुई थी। राजा और प्रजा का भेद भी निर्माण होने लगा। राजा का बेटा, राजकुमारी के साथ ही विवाह कर सकता था। इंग्लैण्ड के राजकुमार प्रिंस चार्ल्स ने डाइना के साथ विवाह किया तब 'राज परिवार का, राजपरिवार के साथ ही विवाह होना चाहिए' यह परम्परा टूट गयी। बाद में प्रिंस चार्ल्स का लग्न-विच्छेद भी हो गया और उसने दूसरा

विवाह किया, वह भी प्रजाजनों में एक थी। चार्ल्स के बेटे विलियम ने कैथी के साथ विवाह किया। कैथी भी राजपरिवार की नहीं है।

ईसा मसीह द्वारा क्रिश्चियन धर्म की स्थापना हुई, वह पहले साधारण घर (परिवार) का था और उसने प्रेम, शान्ति आदि का संदेश देना शुरू किया जिसके कारण वहाँ के राजाई परिवार में हलचल मच गयी। ईसा मसीह ने भी अनेक चमत्कारों के आधार पर धर्म स्थापित किया जैसेकि शूली पर चढ़ने के अगली रात में सबको भरपेट भोजन खिलाया। सब कहते हैं कि ब्रेड के दो टुकड़े, पाँच मछली व थोड़ी शराब था, इतने कम खाने की चीजों में ईसा मसीह ने सबको भोजन कराया। लास्ट सपर (Last Supper-अंतिम भोजन) का चित्र वेटिकन में आज भी मौजूद है। स्थल संकोच के कारण अन्य धर्मों जैसे जैन, पारसी आदि की चर्चा नहीं करते परंतु इसलाम धर्म के बारे में विशेष चर्चा करनी पड़ेगी। सब जानते हैं कि मोहम्मद पैगम्बर द्वारा परमात्मा का पैगाम सबको मिला व मुस्लिम धर्म की रचना हुई। बचपन में ही उन्होंने माँ-बाप की छत्रछाया गँवायी थी और उनकी पालना चाचा ने की। बड़े होकर उन्होंने अपने से पंद्रह वर्ष बड़ी खदीजा बानो के साथ विवाह किया, उसके बाद ही उनकी ज्ञान साधना शुरू हुई। उनको परमात्मा के संदेश, पैगाम मिलते थे। इसलाम धर्म के स्थापक मोहम्मद पैगम्बर को मारने के लिए खलीफा के सैनिक आए लेकिन चमत्कार ऐसा हुआ कि मोहम्मद पैगम्बर साहब अपनी जान बचाने के लिए एक गुफा के अंदर छिप गए। गुफा के दरवाजे पर मकड़ी ने दो मिनट (कुछ ही क्षणों) में जाल बना दिया, फलस्वरूप गुफा का मुख (दरवाजा) मकड़ी के जाल से ढक गया। खलीफा के सैनिक गुफा का दरवाजा मकड़ी के जाल से ढका देखकर आगे निकल गये। इस प्रकार उनकी रक्षा हो गई। उस जमाने में अनेक छोटे-छोटे परिवार (कबिले) अरबस्तान में रहते थे जो आपस में लड़ते थे और अपनी बनाई हुई रस्मों (संविधान) का पालन कराते थे। जुआ, शराब, व्यभिचार आदि के कारण उस समय का अरब समाज बरबाद हो रहा था। मोहम्मद साहब ने इस समाज को अपना सहयोग देकर शासन जमाया। व्यसनों से समाज को मुक्त किया और समाज को धार्मिक बनाया। उन्हें मक्का छोड़कर के पथरेब प्रति हिजरत करनी पड़ी। बाद में उनका शासन व्यवस्थित हो गया। उनका सादगी भरा जीवन सबके लिए आदर्श बना। बेटी फातिमा को दहेज में एक घंटी और चटाई दी। इतनी सादगी से उन्होंने इकलौती बेटी की शादी कराई।

किंतु उनके अवसान के बाद उनका वारिस तय नहीं किए जाने के कारण झगड़ा शुरू हो गया और उनके दामाद हजरत अली को लोगों ने खलीफा अर्थात् प्रतिनिधि बनाया परंतु उनको सुन्नी मुस्लिमों ने स्वीकार नहीं किया और उसकी बेटी का ससुर अबु बकर पहला खलीफा बना। उसके बाद दूसरा खलीफा हजरत उमर बना जो लश्कर का संचालन करने में होशियार था और उसी कारण शिया और सुन्नी के बीच में संघर्ष शुरू हुआ और कर्बल्ला के युद्ध के बाद संघर्ष और भी बढ़ा। इसलाम धर्म में अनेक राजाओं का परिवार बदली हुआ। बाद में अरबों ने जेरूसलम शहर में कब्जा किया और परिणामस्वरूप रोमन कैथोलिक धर्म के पोप ने धर्मयुद्ध की घोषणा की। हम जानते हैं कि मुहम्मद गौरी जैसे के द्वारा इसलाम परम्परा की राजाई भारत में आयी और भारत के दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान पर जीत प्राप्त करके भारत में इसलामी राज कारोबार की स्थापना हुई। आज विश्व में 52 देशों में इसलाम राजधर्म है किंतु सभी देशों में संविधान रूपी कानूनी व्यवस्था जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं है। जैसे हिन्दुओं का धर्मग्रंथ गीता है वैसे ही उनका धर्मग्रंथ कुरान है। करीब बीस साल पहले अमेरिका की आध्यात्मिक संस्थाओं के सहयोग से 'पुनर्जन्म एक वैज्ञानिक सिद्धांत है' इस बारे में निबंध स्पर्धा आयोजित की गई। तब इसलाम धर्म की एक बहन ने कुरान की आयतों के बारे में

ओरिजनल अरबी भाषा के शब्दों का अर्थ बतलाकर सिद्ध किया था कि कुरान को अच्छी रीति समझा जाए तो कुरान पुनर्जन्म के सिद्धांत के विरुद्ध नहीं है। अगर कुरान में लिखे सिद्धांतों के अनुसार मुस्लिम धर्म आगे बढ़ता तो इसलाम धर्म के लोगों के द्वारा वर्तमान में त्रासवाद का जो निर्माण हुआ है, वह नहीं होता।

इस तरह से देखा जाए तो इसलाम धर्म स्थानों पर संविधान व्यापक रूप में अमल में नहीं है। तानाशाही, त्रासवादी तथा व्यक्तिगत मतों के आधार पर चलने वाला यह समाज ज्ञान और साधना के आधार पर चलता तो बहुत अच्छा होता। शुरू में जो एकता थी, वह आज नहीं है, परिणामस्वरूप देश-विदेश में आज के दिन कम से कम 30 स्थानों पर छोटा-बड़ा युद्ध हो रहा है। ऐसी परिस्थिति में संविधान को लागू करना और उसकी छत्रछाया में समाज की पालना हो, यह बहुत कठिन है। अमेरिका के खोजकर्त्ता क्रिस्टोफर कोलंबस के द्वारा अमेरिका की खोज हुई, तब से राजाशाही नहीं, लोकशाही है। तभी से उत्तरी अमेरिका तथा केनेडा के सब देशों में लोकशाही स्थायी हुई है। संविधान का अर्थ है श्रेष्ठ समाज की रचना करना। सयुंक्त राष्ट्र संघ का लक्ष्य है अच्छे समाज की स्थापना करना। अच्छे समाज की रचना करने का कार्य तब होगा जब आदिकाल में लोग धर्म के आधार पर जो कार्य करते थे, ऐसे कानून का कारोबार हो। वर्तमान समय की परिस्थिति को हम सब जानते हैं। मैं क्या लिखूँ उसके बारे में, मेरे से ज्यादा विद्वान बैठे हैं, जो अच्छी तरह लिख सकते हैं। मैंने यहाँ विदेश में धर्मों में कानून कैसे बढ़े, उसके बारे में संक्षिप्त इतिहास लिखा है। ❖

दुख को बदला सुख में

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

एक महिला को एक अपाहिज बेटी पैदा हुई। उससे अपनी बेटी की निराशा और अपंगता देखी नहीं गई। उसने हिम्मत दिखाई और एक विकलांग सोसाइटी की स्थापना की। फिर न केवल अपनी बेटी का भविष्य उज्ज्वल बनाया बल्कि प्रदेश व देश के अनेकों विकलांग बच्चों के जीवन में आशा की किरण जगाई। इससे काफी सुधार हुआ और देश में विकलांगों की मदद के अनेक केन्द्र खुलने लगे।

वह बेटी के दुख को सुख में बदल कर खुद भी सुखी हुई और औरों को भी सुखी बनाने के निमित्त बनी। पहले वह अपनी विकलांग बच्ची को देखकर घर पर रोती रहती थी। यदि वह इसी तरह रोती रहती तो न स्वयं को सम्भाल पाती और न किसी अन्य को।

मनुष्य की अपनी मनोवृत्ति के अनुसार ही उसे सुख और दुख का आभास होता है। कुछ व्यक्ति सुखी होते भी दुखी हैं तो कुछ दुख में भी सुख तलाश लेते हैं। अपने दुख को कम करने का सबसे उत्तम तरीका यही है कि हम दूसरों के दुख को भी समझें, दूसरों के दुख को बांटने से ही जीवन सार्थक होता है।

शिवभगवानुवाच – एक है मुसकराने की दुनिया और दूसरी है रोने की दुनिया। अभी रोने की दुनिया का अन्त और मुसकराने की दुनिया अर्थात् सुख की दुनिया का सैपलिंग लग रहा है। अब अपना सारा ध्यान इसी पर देना है क्योंकि यह संगमयुग अर्थात् मुसकराने का युग है। ❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

पवित्र दृष्टि

❍ ब्रह्माकुमारी किरण, बोरिवली, मुम्बई

कहा जाता है, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। दृष्टि का अर्थ है वृत्ति सहित हमारी नजर। पवित्र दृष्टि उनकी ही हो सकती है जिनकी वृत्ति पवित्र हो। जिनकी वृत्ति पवित्र होती है उनकी आसपास की दुनिया, उनके भीतर की दुनिया, सब कुछ उन्हें पवित्र (सकारात्मक) ही दिखाई देगा।

परमपिता परमात्मा ने हमें गहरी और बेहद की बहुत ऊँची पवित्रता सिखायी है, हर कर्मेन्द्रिय की पवित्रता सिखाई है जैसे कि कानों की पवित्रता अर्थात् कानों से भी बुरी बातें नहीं सुनो, मुख से बुरा मत बोलो, आँखों से बुरा मत देखो, हाथों से बुरा मत करो और मन से बुरा मत सोचो। बाबा ने आत्मा की सूक्ष्म इन्द्रियों – मन, बुद्धि और संस्कार का ज्ञान देकर, सूक्ष्म पवित्रता सिखाई है।

हर विकार दिख जाता है आँखों में

सबसे सूक्ष्म है मन। मन का कनेक्शन हर कर्मेन्द्रिय के साथ है। आँखों के साथ उसका बहुत सीधा संबंध है। कुछ देखा तो तुरन्त विचार चलने शुरू हो जाते हैं और कुछ सोचा तो तुरन्त आँखों से दिखाई देने लगता है। बुरी भावना भी पहले मन में आती है फिर आँखों से दिखायी पड़ती है जैसे क्रोध। मुख से कुछ भी ना बोलने पर भी पता चल जाता है कि इनको गुस्सा आया है। कैसे पता चला? आँखों से। ऐसे ही लोभ वाली आँखें, चोर की आँखों की तरह दिखाई पड़ती हैं। मोह वाली आँखें भी अलग होती हैं और प्यार वाली आँखें अलग। मोह विकार है और 'प्रेम' आत्मा का एक गुण है। अहंकार वाली आँखों का तो तुरन्त पता चल जाता है और यदि ईर्ष्या, द्वेष, नफरत की मिलावट होगी तो भी आँखों में साफ-साफ दिखाई पड़ती है। सबसे बड़ा विकार है 'काम'। काम से भरी काली नजर का भी देखते ही पता चल जाता है।

गुण भी आँखों में दिखते हैं

अगर विकार आँखों से दिखाई देते हैं तो गुण भी आँखों से ही दिखाई देते हैं जैसे कि शान्ति, प्रेम, रहम की भावना, हिम्मत, दृढ़ता, मधुरता आदि-आदि। हमारी भावनाएँ आँखों से ही क्यों दिखाई देती हैं? आँखों में पानी है शायद इसीलिए। बाकी शरीर में तो खून दौड़ रहा है। पानी जब शुद्ध होता है तो उसके नीचे पड़ी अच्छी वा बुरी चीज स्पष्ट दिखाई देती है। मूर्तिकार मंदिर की मूर्ति बहुत सुंदर बनाते हैं और उसमें भी उनके नयन अति सुंदर, मंत्रमुग्ध कर देने वाले मनोहर बनाते हैं। भक्तगण भी देवी-देवताओं की पूजा-आराधना के समय अपलक उनके नयनों को ही निहारते रहते हैं। उनके नाक, कान, मुख की तरफ इतना नहीं देखते जितना नयनों को देखते हैं।

जैसी वृत्ति वैसे प्रकम्पन

दृष्टि से पहले होती है वृत्ति। जैसी हमारी वृत्ति होगी वैसे प्रकम्पन वातावरण में फैलेंगे। यह बात सनातन सत्य है। हमारे हर विचार की तरंगें वातावरण में फैलती हैं। ये तरंगें जड़ और चैतन्य हर वस्तु को प्रभावित करती हैं। इसी कारण संसार के हर घर का वातावरण अलग-अलग है। मंदिर का वातावरण और किसी क्लब का वातावरण अलग-अलग है क्योंकि वहाँ उसी प्रकार के विचारों वाले लोग आते हैं। हम अपने घरों में प्लास्टिक के फूल रखते हैं। उनमें खुशबू नहीं होती केवल रंग और सुंदरता होती है। हम जब-जब उनको देखेंगे तब-तब हमारे मन में विचार आयेगा कि ये फूल कितने सुंदर हैं और ये प्रकम्पन वातवरण में फैलेंगे। जड़ वस्तु तरंगें नहीं फैला सकती लेकिन उन्हें देख, उनकी सुन्दरता को निहार कर हम चैतन्य आत्मायें प्रकम्पन फैला सकती हैं।

बुराई में अच्छाई खोजने से बनेंगे देवता

सुंदर को सुंदर ही कहेंगे, अच्छे को अच्छा ही कहेंगे लेकिन असुंदर और अप्रिय में भी अच्छाई खोज लें, उसे कहेंगे पवित्र दृष्टि-वृत्ति। स्वयं परमपिता परमात्मा शिव हमें यह कला सिखलाते हैं। भक्तगण मंदिर में भगवान या देवी-देवताओं के सामने जाकर कहते हैं कि 'हम पर एक पावन दृष्टि डाल दो, हमारे गुनाहों को माफ कर दो, हमारे पाप धो डालो.......।' पाप नकारात्मक हैं और माफ करना सकारात्मक इसलिए भक्तों के कहने का अर्थ यही है कि आप हमारी नकारात्मकता को सकारात्मकता में परिवर्तन कर दो। जो आत्मायें वर्तमान सुहावने संगमयुग पर बुराई में भी अच्छाई खोज लेंगी वे ही देवता बनेंगी और पूजनीय भी। द्वापरयुग से उनके ही मंदिर बनेंगे और उनके भक्त भी उनसे यही चाहना रखेंगे कि वे उनके पापों और गुनाहों को माफ कर दें।

हमारा लक्ष्य है पावन दुनिया स्थापन करने में भगवान के मददगार बनना। अगर यह बात बुद्धि में होगी तो पवित्रता अपनाने में मुश्किल नहीं होगी। जैसे छाता बनाने वाले की बुद्धि में था कि मैं बरसात से बचने का साधन बनाऊँ और छाता बन गया। इसी प्रकार हम भी सोचें, हमें पवित्र, सतोप्रधान दुनिया स्थापन करनी है, फिर स्वत: पवित्र बनते जाएंगे। कहा जाता है, दुनिया शुरू होती है खुद से और पूरी भी होती है खुद पर तो जब खुद को बदलना शुरू करते हैं तो दुनिया बदलना शुरू होती है और जब खुद सम्पूर्ण पावन बन जाते हैं तब दुनिया भी सम्पूर्ण पावन बन जाती है।

❖

आम फलों का राजा क्यों?

ब्रह्माकुमार भगवान भाई, शान्तिवन

भारत में आम को फलों का राजा माना जाता है। यूँ तो इस देश में एक से बढ़कर एक मीठे, स्वादिष्ट और औषधीय गुणों से भरपूर फल हैं। नारियल भी सभी का प्रिय फल है, बहुत गुणकारी भी है, आध्यात्मिक महत्त्व वाला भी है, फिर भी आम ही राजा क्यों, आइये इस पर चिंतन करें –

आम ऊपर से नरम होता है तथा अन्दर से इसकी गुठली बहुत मजबूत होती है। नारियल ऊपर से सख्त होता है पर अन्दर से नरम होता है। राजा बनने के लिए ऊपर से नम्रचित परन्तु अन्दर से नियम-मर्यादा में शक्तिशाली होना जरूरी है।

आम के साथ सबका बहुत प्यार होता है, उसे मुँह में लेकर चूसते हैं। आम के गुद्दे के खत्म होने के बाद भी उसकी गुठली को बार-बार चूसते हैं परन्तु नारियल को अगर चूसने लगें तो बत्तीसी टूट जाएगी पर मिलेगा कुछ नहीं। राजा बनने के लिए आम की तरह सबका प्यारा बनना जरूरी है ताकि लोग हमें देखकर रास्ता ना काटें बल्कि बात करने की, समस्या का निदान लेने की भावना उनमें जाग्रत हो।

अगर कोई व्यक्ति धूप में थक जाता है या चलते-चलते परेशान हो जाता है तो आम के पेड़ के नीचे बैठता है, आम की छाया से अपनी थकान मिटाता है। अगर नारियल के नीचे कोई बैठे-सोए तो थकान तो दूर अचानक नारियल फल या पत्ते गिरने से सोने वाले व्यक्ति को चोट पहुँच सकती है। दुनिया की परेशानी से, बातों से, तनाव से तंग होकर कोई हमारे सम्पर्क में आता है तो उसकी परेशानी को, तनाव को मिटाकर के फ्रेश करके भेज देते हैं तो हम भी राजा बनेंगे। राजा बनने के लिए दूसरे के दु:ख को हरो। अगर हमारे सम्पर्क में आने वाला, हमारे व्यवहार से दुखी होता है, परेशान होता है तो राजा कैसे बनेंगे?

आम को जब फल लगता है तो वह झुकता है परन्तु नारियल को फल लगता है तो वह और ऊपर चला जाता है। इसी तरह जीवन में विशेषता, गुण आदि आने पर यदि झुकने की बजाए अभिमान में आ जाते हैं तो वे राजा नहीं बन सकेंगे। ❖

दु :ख-अशान्ति का इलाज

❍ ब्रह्माकुमार बद्री विशाल, त्रिपाठी नगर,लखनऊ

संसार का प्रत्येक व्यक्ति सुख और शान्ति चाहता है। सुबह से शाम तक वह सारे उद्यम इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु करता है। आमतौर से आज का इन्सान धन को ही सुख-शान्ति का आधार मानते हुये अपने आप को एक ऐसी अन्धी दौड़ में शामिल कर लेता है जिसका कोई अन्त नहीं। रेगिस्तान में प्यासे मृग की भाँति वह अपना अमूल्य जीवन इस धन रूपी रेत की चमक को पानी समझने के भ्रम में फँसा देता है। उसकी सुख-शान्ति की प्यास कभी नहीं बुझती और वह इस दुनिया से विदा हो जाता है।

कारण जाने बिना निवारण नहीं

दु:ख और अशान्ति से सभी छुटकारा चाहते हैं किन्तु वे इसके कारण को नहीं जानते। बिना कारण जाने निवारण सम्भव नहीं है। डॉक्टर भी यदि किसी मरीज का इलाज करता है तो पहले उस के मर्ज का कारण खोजता है, फिर उसका निवारण करता है। यदि बिना उचित परीक्षण के इलाज किया जाए तो मर्ज के बढ़ने अथवा दवा के कुप्रभाव की सम्भावना प्रबल हो जाती है। आज यही हो रहा है, सभी दु:ख से तो छुटकारा चाहते हैं किन्तु इसका परीक्षण किसी योग्य चिकित्सक से नहीं कराते। चूंकि दु:ख और अशान्ति रूपी बीमारी का सम्बन्ध आत्मा से है और आत्मा का सर्वोच्च चिकित्सक परमात्मा ही है इसलिये अधकचरे ज्ञान वाले चिकित्सकों से परामर्श लेना या इलाज कराना श्रेयस्कर नहीं है।

मूल कारण अपवित्रता

सर्वोच्च चिकित्सक परमपिता परमात्मा ने हमें स्पष्ट रूप से बताया है कि दु:ख और अशान्ति रूपी बीमारी का मूल कारण अपवित्रता है। अपवित्र विचार, बोल और कर्म ही हमें दु:खी और अशान्त करते हैं। यादगार शास्त्रों की कथाओं के अनुसार मन्थरा का एक अपवित्र संकल्प श्रीराम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम को चौदह वर्ष का बनवास दिला सकता है और चक्रवर्ती प्रतापी राजा दशरथ की मृत्यु का कारण बन सकता है। द्रौपदी का एक अपवित्र बोल 'अन्धे की औलाद अन्धे', महाभारत का युद्ध करा सकता है और सीता को चुराने जैसा एक अपवित्र कार्य रावण जैसे विद्वान के वंश का सम्पूर्ण नाश करा सकता है।

कलियुग में एक ओर, पवित्र और सकारात्मक विचार मोटर, गाड़ी, टेलिफोन, हवाई जहाज, बिजली, कम्प्यूटर आदि वैज्ञानिक आविष्कारों का आधार बनकर सारे मानव समाज को सुख पहुंचा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर, व्यर्थ, अपवित्र और नकारात्मक विचार आग्नेयास्त्र आदि का निर्माण एवं प्रयोग कर सम्पूर्ण मानवता के विनाश का कारण बन रहे हैं।

अपवित्रता के भयावह परिणाम

पवित्र विचारों से सुखमय संसार का निर्माण होता है जबकि अपवित्र विचार स्वर्ग को भी नर्क बना देते हैं। आज अपवित्र विचारों के कारण कोर्ट-कचहरी मुकदमों से पटे पड़े हैं और अपवित्र अन्न के कारण अस्पताल मरीजों से पटे पड़े हैं। है किसी के पास इन समस्याओं का निदान? किसी के पास नहीं। एक अध्ययन के अनुसार यदि आज अपराध बन्द हो जायें और सभी न्यायालय अपनी पूरी क्षमता से कार्य करें तो लम्बित मुकदमों के निस्तारण में 20 से 25 वर्ष लग जायेंगे। बीमारी के लिये किसी नयी दवा की खोज में 8 से 10 वर्ष लगते हैं तब तक एक अन्य लाइलाज बीमारी का जन्म हो जाता है। दूसरी ओर 10 वर्षों के अथक प्रयास से खोजी गयी दवा के 5 वर्षों में दुष्परिणाम भी सामने आ जाते हैं। आखिर हम अन्धी दौड़ में कहाँ भागे जा रहे हैं? ज़रा ठहर कर विचार करें। परिवार, समाज, देश एवं विदेश की जितनी भी समस्यायें हैं, कलह, क्लेश हैं वे सब

मानव मन में बैठे हुये अपवित्र एवं संकीर्ण सोच रूपी दानव की देन हैं।

अन्न और मन के शद्धिकरण की कला

जिसका पवित्रता का ग्राफ जितना ऊँचा है उतना ही वह सुखी और शान्त है। हम कहते तो हैं कि 'जैसा अन्न वैसा मन' किन्तु अन्न और मन दोनों के एक साथ शुद्धिकरण की कला किसी के पास है नहीं। यह कला स्वयं परमपिता परमात्मा ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से नि:शुल्क सिखा रहे हैं। मन शुद्ध होने पर वाणी और कर्म स्वत: शुद्ध हो जाते हैं। यह कला कितनों ने सीखी है और दु:ख-अशान्ति की बीमारी में कितनों को फायदा हुआ है, यह आप स्वयं देख सकते हैं। ❖

भारी मन को किया रूई जैसा हल्का

ब्रह्माकुमारी नमिता बहन, किदवई नगर, कानपुर (उ.प्र.)

जब मार्च, 2016 में आबू बाबा से मिलने गई तो मेरे साथ के भाई-बहनें आबू पर्वत घूमने गये। मैंने कहा, मैं पांडव भवन में ही रुककर प्यारे बापदादा के पास तपस्या करूँगी। दो घन्टे की तपस्या के बाद जब योग-कक्ष से निकली तो मैंने पर्स से कुछ निकालना चाहा पर पर्स तो था ही नहीं। मुझे काटो तो खून नहीं। होश उड़ गये। मुँह से निकला, बाबा यह क्या हुआ? मैं अपना पर्स शान्तिवन के बाथरूम में छोड़ आई थी। जो बहनें मेरे साथ थीं, वे बोलीं, हमसे पैसे ले लो और भण्डारी में डाल दो। मैंने कहा, नहीं, बाबा ने कहा है, कभी उधार मत लेना, हिसाब-किताब बनता है।

सबने पूछा, पर्स में कितने रुपये थे? मैंने गिनती नहीं बतायी क्योंकि सबके व्यर्थ संकल्प चलेंगे। मेरा मन इतना भारी हो गया कि मैं वर्णन नहीं कर सकती। पर्स में करीब 15-16 हजार रुपये थे। मैं फिर बाबा की कुटिया में गई और बाबा से मन ही मन बहुत शिकायत करती रही। संकल्प-विकल्प चलने लगे। किसी का फोन नम्बर भी नहीं था जो कहती कि बाथरूम में पर्स है, उठा लो।

मैंने बाबा से कहा, बाबा, टचिंग दो, मिलेगा कि नहीं? कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। मैंने यही शब्द कई बार दोहराये कि मिलेगा कि नहीं? महसूस हुआ, बाबा कह रहे हैं, बच्चे चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ। मैंने फिर पूछा, बाबा, मिलेगा कि नहीं, टचिंग दो क्योंकि मन शांत नहीं हो रहा था, योग लग नहीं रहा था परन्तु किसी को भी पता नहीं पड़ने दे रही थी इसलिए कि बात फैलेगी और वातावरण खराब होगा। फिर मैंने मन ही मन बाबा से गुस्सा करके कहा, अच्छा मत टचिंग दो लेकिन मेरा मन हल्का कर दो जिससे योग अच्छे से लग जाये। इतना कहना था कि पत्थर जैसा भारी मन रूई की तरह हल्का हो गया। ऐसा लगा कि मेरा पूरा शरीर एकदम हल्का है और सोफे से दो इंच ऊपर बैठी हूँ। मन इतना खुश कि कह नहीं सकती, सिर्फ महसूस कर सकती हूँ। मुँह से निकला वाह, बाबा वाह! कमाल है आपका! फिर शाम को जब शान्तिवन आई तो कमरे में कोई नहीं था, सब कार्यक्रम में गये हुए थे। मैं भी चली गई। रात के 10 बजे कमरे में लौटी तो बहुत ही सरल भाव से पूछा कि मैं अपना पर्स छोड़ गई थी, मिला क्या? बहनों ने खुश होकर मेरा पर्स मुझे लौटाया और कहा, देख लो, सब ठीक है, टोली खिलाओ। मैंने बाबा का बारम्बार शुक्रिया किया। बाबा ने जो कहा, बच्चे, चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ, अपना सारा बोझ मुझे देकर हल्के हो जाओ, वह एकदम सही है। पर्स मिलने के बाद ही मैंने बताया कि पर्स में कितने रुपये थे। फिर उस धनराशि को बाबा के यज्ञ में लगा दिया।❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका में वास्तव में ज्ञानसागर की वे अमृत बूंदें हैं जो प्यासी आत्माओं को आत्मतृप्त कर शान्ति व खुशी का अनुभव कराती हैं। मार्च, 2016 के अंक में संजय की कलम से 'शिवरात्रि ही शुभरात्रि (Good Night) है' लेख प्रेरणास्पद है व शिव-अवतरण का सच्चा रहस्य स्पष्ट करता है। भ्राता रमेश जी द्वारा लिखित 'दैवी संविधान – पूर्व भूमिका' लेखमाला लाखों पाठकों के लिए मार्गदर्शन का कार्य कर रही है। 'सशक्तिकरण महिला का या पुरुष का या दोनों का' विशेष सबके लिए प्रेरणादायी व हितकारी है। ज्ञानामृत परिवार के सभी लेखकों व भाई-बहनों को बहुत-बहुत बधाई

ब्र.कु.जयकिशोर, ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज, आबू रोड

फरवरी, 2016 के अंक में 'वाह ड्रामा वाह! वाह बाबा वाह!' लेख पढ़कर ड्रामा की ढाल को कैसे यूज़ करना है, इसका बहुत अच्छा स्पष्टीकरण मिला। 'एक महाभ्रान्ति नारी के प्रति' लेख में समाज में फैली गलत धारणा कि नारी मोक्ष की अधिकारी नहीं होती, इस पर जो प्रकाश डाला गया, सच में सराहनीय है। भाई-बहनों के अनुभव पढ़कर, सर्वशक्तिवान बाबा के चमत्कारिक कार्यों से हर एक को कैसे सफलता मिलती है, यह जान दिल से निकला, वाह बाबा वाह! ज्ञानामृत के हर पेज के नीचे जो शुभ विचार लिखे होते हैं, सच में अतुलनीय हैं।

ब्रह्माकुमार संदीप, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

अप्रैल, 2016 के अंक में प्रकाशित 'मानसिक विकलांगता से बचें' लेख में कहा गया है कि भीतर की टूटन से बचाता है 'राजयोग'। यह हर आत्मा के लिए अनुभवयुक्त सत्य है। अपने को आत्मा अनुभव करना, अपने श्रेष्ठ पवित्र विचारों के करीब रहना आज के तमोप्रधान वायुमंडल में स्वयं की सुरक्षा का एक मात्र साधन है। विचारशक्ति ही हमारी अपनी दौलत है, हमारी सबसे बड़ी ताकत है। राजयोग हमारी आंतरिक कमजोरियों को खत्म कर हमें भीतर से सशक्त करता है और प्रभु परमात्मा से हमारा सीधा कनेक्शन जोड़ता है। लेखिका बहन को धन्यवाद।

बसंतकुमार मोदी, दुर्ग (छ.ग.)

हर महीने ज्ञानामृत पत्रिका मिलती है तो कोशिश करता हूँ कि पत्रिका के लेख ऐसे पढ़ूँ कि एक महीना चलें क्योंकि अगली पत्रिका तो अब महीने बाद ही मिलेगी। परन्तु हर बार मेरी यह कोशिश असफल हो जाती है। जब पत्रिका पढ़ने बैठता हूँ तो एक-एक पृष्ठ पढ़ते-पढ़ते सारी पत्रिका पढ़ लेता हूँ और फिर सोचता हूँ कि एक बार में सारी क्यों पढ़ डाली और फिर बेसब्री से अगली पत्रिका का इंतजार करता रहता हूँ। मुझे लगता है कि शायद यह स्थिति कमोबेश हर पाठक की होगी। अतः सम्पादक मंडली से विनम्र आग्रह है कि ज्ञानामृत मासिक पत्रिका के पृष्ठ बढ़ाए जाएँ।

ब्रह्माकुमार संजय गुप्ता, हटिया, रांची (झारखण्ड)

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.शान्तिवन- 37वें अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.मोहिनी बहन, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.भूपाल भाई, नगरपालिकाध्यक्ष भ्राता सुरेश सिंदल तथा अन्य। **2.पटियाला-** केन्द्रीय महिला तथा बाल कल्याण मंत्री बहन मेनका गांधी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राखी बहन। साथ में डॉ.महेश शर्मा, भगवान दास जुनेजा तथा ब्र.कु.जगदेव भाई। **3. आबू पर्वत-** ज्ञान सरोवर में समाजसेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते मध्य प्रदेश अनुसूचित जाति, जनजाति आयोग अध्यक्ष भूपेंद्र आर्य, प्राकृतिक ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण, विज्ञान तकनीकी संसदीय समिति सदस्य व ओडिशा राज्यसभा सदस्य भूपिन्द्र सिंह गिल, रोटरी 3040 प्रांतपाल दर्शन सिंह गांधी, बी. के. संतोष बहन, बी.के.अमीरचंद, बी. के. प्रेम, बी. के. अवतार एवं अन्य।। **4.नवाबगंज-** उत्कृष्ट ग्रामीण सेवा के लिए ब्र.कु.विपिन भाई को सम्मान-पत्र देकर सम्मानित करते हुए उ.प्र.के कृषि मंत्री भ्राता विनोद कुमार सिंह तथा ब्र.कु.राजू भाई। **5.सोनीपत-** जी.टी.रोड से सोनीपत रिट्रीट सेन्टर तक पक्की सड़क निर्माण कार्य का शुभारम्भ करते हुए हरियाणा की महिला तथा बाल विकास मंत्री बहन कविता जैन। साथ में ब्र.कु.अमीरचंद भाई तथा अन्य। **6.पेठापुर-** शिवदर्शन आध्यात्मिक मेले में बाबा की कुटिया का उद्घाटन करते हुए गुजरात के मंत्री मंगूभाई पटेल, नगरपालिका प्रमुख भ्राता रणजीत सिंह वाघेला, ब्र.कु.ईश्वर भाई, ब्र.कु.अमृत भाई तथा ब्र.कु.शिल्पा बहन। **7.वाराणसी-** महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति प्रोफेसर पृथ्वीश नाग को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुरेन्द्र बहन। **8.अहमदनगर-** केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री मोहनभाई कुंडारिया को 'असीम आनंद की ओर – अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज' पुस्तक भेंट करते हुए ब्र.कु.दीपक हरके। **9.फर्रुखाबाद-** उ.प्र.के पूर्व राज्यमंत्री भ्राता नानकदीन तथा महिला आयोग सदस्या बहन अर्चना राठौर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मंजू बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50. Issue : July, 2016.

1.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए बी.एच.यू. के कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक भ्राता रवि प्रताप सिंह, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के एक्सटेन्शन डायरेक्टर डॉ.ए.एम.पारखिया, ब्र.कु.करुणा भाई, ब्र.कु.राजू भाई, ब्र.कु.रानी बहन, ब्र.कु.सरला बहन तथा ब्र.कु.ममता बहन।

2.ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत)-
वैज्ञानिक व अभियंता प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सरला बहन, पद्मभूषण डॉ.ए.बी.रामाराव, ब्र.कु.गोदावरी बहन, ब्र.कु.मोहन सिंघल, प्रेफब लि., दिल्ली के प्रबंध निदेशक भ्राता राजेश गोयल, ब्र.कु.भरत भाई, ब्र.कु.भारत भूषण तथा अन्य।

3.ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत)-
अखिल भारतीय खेल सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.जगबीर भाई, ब्र.कु.शशि बहन, मिस इंडिया, मिस एशिया और मिस वर्ल्डबहन श्वेता राठौर,लिम्का बुक फेम भ्राता कनक सिंह परमार तथा अन्य।

4.नई दिल्ली-
केन्द्रीय रेल मंत्री भ्राता सुरेश प्रभु से ज्ञानचर्चा के पश्चात् ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.प्रकाश भाई, ब्र.कु.सविता बहन तथा ब्र.कु.सोमशेखर भाई उनके साथ।